तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया
दीवाना
ास्को ओह! लम्पिक

पंचतंत्र
तीन इक्कों की चाल
खरगोश के बच्चे आज तू बहुत खुश नजर आ रहा है, क्या बात है ? तेरे नाम घास की बोरी की लाटरी तो नहीं निकली है ?
चलो तुम भी अच्छे मौके पर आये तेंदुलकर, आज मेरा बर्थ डे है। कोई दोस्त बधाई देने नहीं आया। शायद याद न रहा हो उनको।
चलो मैं ही बधाई दे देता हूं तुझे।

खाली बधाई देने से काम नहीं चलेगा, मैं अपना बर्थ डे सदा ताश की बाजी जमा कर मनाता हूं। तुम्हें मेरे साथ स्टेक लगा कर जुआ खेलना होगा।
चलो मंजूर है। आज तो वैसे ही मैं खाली था।

ये बेवकूफ तेंदुआ मेरे जाल में फंस ही गया। आज इसकी खूब हजामत करूंगा। आजकल मुझे पत्ते बहुत अच्छे पड़ रहे हैं, जो भी मेरे साथ खेलता है अपनी सारी कमाई लुटाता है।

चलो यह आखिरी बाजी रही ! लगा दिया सब कुछ दाव पर।
मैंने भी लगा दिया सब कुछ दाव पर, मैं तो पहले ही हार रहा था। जो कुछ बचा था वह लगा दिया। कौन से पत्ते हैं तुम्हारे पास।
मेरे पास तीन इक्के हैं। मैं जीत गया। मैं जीत गया।
तुम्हारे पास तीन इक्के हैं तो तुम कैसे जीते ? तुम हार गये खरगोश भाई।
मैं कैसे हारा ? तीन इक्कों से बड़ा कोई पत्ता नहीं होता, क्या है तुम्हारे पास ?

मेरे पास तुम्हारी गर्दन तोड़ने के लिए दांत और मजबूत जबड़े हैं और साथ में नोकीले नाखूनों वाले खूनी पंजे हैं।

बड़ा आया मुझे हराने वाला ! हूं ह।
BURP
शिक्षा—अपने से ताकतवर के नहीं खेलना चाहिए

ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : काम बनते बिगड़ते रहेंगे, यात्रा में सुख, प्रयासों में सफलता, वातावरण सुधरेगा, लाभ के चान्स मिलेंगे, झगड़े आदि से बचें, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, अच्छे लोगों की संगति से काम बन जायेंगे।

वृष : रोजगार में उन्नति, लाभ भी समय पर मिलता रहेगा, दिन ठीक नहीं, कारोबार मध्यम, यात्रा पर न जायें, मित्र या किसी बन्धुजन से मन-मुटाव, भाग्य सहारा देगा, हालात सुधरेंगे, कामकाज में उन्नति।

मिथुन : लाभ देर से मिलेगा, व्यय बढ़ेगा, काम रुक-रुक कर बनेंगे, लाभ यथार्थ, कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, परिश्रम सफल, कारोबार भी ठीक चलेगा, घरेलू झंझटों से चिन्ता, स्थायी कामों में भी अड़चन पड़ सकती है।

कर्क : कुछ परेशानियों के बावजूद भी हालात वश में ही रहेंगे, नई योजना पर विचार, काम पूरे होते रहेंगे, लाभ खर्च बराबर ही, परिवार से सुख, परिश्रम करने पर भी सफलता आशा से कम।

सिंह : बनते कामों में अड़चन, नया काम न करें, स्थायी काम धंधों में सुधार, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय, आय में वृद्धि यथार्थ, कामकाज प्रायः ठीक ही चलेगा, मुकदमे आदि में सफलता, हालात सुधरेंगे।

कन्या : यात्रा हो सकती है, विशेष सूचना मिलेगी, जल्दबाजी से काम लेना ठीक नहीं, स्वभाव में गुस्सा रहेगा, यात्रा छोड़ दें तो अच्छा है, व्यय बढ़ेगा, परिश्रम द्वारा सफलता मिलती रहेगी, काम बन जायेंगे।

तुला : कारोबार सुधरेगा, सुख साधनों पर व्यय, घरेलू पक्ष से चिन्ता, अन्य हालात ठीक चलेंगे, शत्रु मुंह की खायेंगे, लाभ में सुधार होगा, व्यर्थ के झंझटों से दिल में घबराहट, यात्रा न करें, घरेलू परेशानी भी बनेगी।

वृश्चिक : मिश्रितफल मिलते रहेंगे, लाभ देर से प्राप्त होगा, व्यापार बढ़ाने के लिए धन का व्यय करना पड़ेगा लाभ भी अच्छा होने लगेगा, यात्रा सफल, शुभ कामों में रुचि, आर्थिक लाभ अच्छा होगा।

धनु : यात्रा सावधानी से करें, बनते कामों में बाधा पड़ेगी, लाभ अच्छा होगा, काम भी समय पर बन जाया करेंगे, कारोबार सुधरेगा, राजकीय कामों में सफलता, धार्मिक कामों पर व्यय, भाग साथ देगा।

मकर : मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी, लाभ खर्च बराबर, दिन अनुकुल नहीं, नए चक्कर में न पड़ें यात्रा में चोट या हानि का भय है, शुभ फलों में वृद्धि पुराने दोस्तों से मिलाप।

कुम्भ : लाभ अच्छा है, रुके हुए काम बन जायेंगे, सुख साधनों पर व्यय अधिक, नई वस्तुओं की खरीद करेंगे, कारोबार में दृढ़ता आयेगी, धर्म-कर्म में रुचि, रुकावटों का सामना, आर्थिक क्षति या व्यय अति अधिक।

मीन : संघर्ष काफी रहेगा, काम पूरे हो जायेंगे, शत्रु अपनी हार मानेंगे, यात्रा सफल, कामों में भी आप सफलता पायेंगे, भाग्य साथ देगा, वातावरण अनुकुल रहेगा, नई योजना पर विचार।

दीवाना का अंक नं० ८ तथा ६ पढ़े। भरपूर मनोरंजन का ममाला निकले और मुख पृष्ठ विशेष आकर्षण रहे। 'फिल्मों के दृश्य' तथा 'शिक्षा फैली तो दहेज' फीचर अंक नं० क्रमशः ८ तथा ६ बहुत पसन्द आये। शेष सभी फीचर मनोरंजक थे। अंक ८ तथा ६ की कहानियां क्रमशः 'कर्ज की अदायगी' और 'खरगोश के सींग' शिक्षाप्रद थीं। मेरा विचार है कि दीवाना का साइज कुछ छोटा कर कम से कम एक पेज की वृद्धि कर दी जाय और भविष्यफल को समाप्त भी किया जा सकता है। और इस बढ़े हुए पेज पर कोई भी नया फीचर बढ़ाया जा सकेगा।

एस० एम० वसीम रिजवी—लखनऊ

दीवाना का नौवां अंक प्राप्त हुआ, मुख पृष्ठ पर दृष्टि पड़ते ही हँसी का फव्वारा छूट पड़ा तथा मोटू-पतलू तथा सिलबिल-पिलपिल का जवाब नहीं, कहानी अनहोनी बहुत पसन्द आई। **जय भगवान निराला—रिवाड़ी**

दीवाना का नया अंक नं० ६ मिला। मुख पृष्ठ देखते ही हँसी के फव्वारे छूट पड़े। इस अंक में 'शिक्षा तो फैली लेकिन दहेज ?' बहुत पसन्द आया। मोटू पतलू, फैन्टम और नजर के नजारे अच्छे रहे। इसमें काका के कारतूस न होने का बहुत दुःख हुआ। आपका दीवाना बहुत लेट आता है। कृपया इसको जल्दी भेजने की कोशिश करें। आपको अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्मेलन के अध्यक्ष चुने जाने पर मेरी तरफ से बहुत-२ बधाई। **रविन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना**

बधाई भेजने हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।
—सं०

मैं दीवाना की नयी पाठक हूँ। मुझे यह किताब बहुत अच्छी लगी। इसके हास्य कलाकार मोटू-पतलू के कारनामे बहुत अच्छे लगते हैं। अब यह किताब प्रति अंक प्रगति कर रही है आशा करती हूँ कि नया अंक अच्छा आयेगा। और अब मुझे अगले अंक का इन्तजार है।

कुमारी कल्पना पाराशर—खण्डवा

मैं आपकी पत्रिका का शुरु से ही पाठक हूँ। मुझे इस पत्रिका में 'क्यों और कैसे' तथा 'काका के कारतूस' स्तम्भ बहुत अच्छा लगता है! इसमें जो उत्तर आप पाठकों को देते हैं वे लगते तो मजाकिया है पर होते बड़े मजेदार हैं। आपके कई उत्तरों को तो मैंने कमरे में लिख कर चिपका रखा है।

एस. एम. आलमगीर—(हजारीबाग)

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूँ। मेरे पूरे परिवार वाले 'दीवाना' को बड़े चाव के साथ पढ़ते हैं। मेरे घर में सात भाई-बहन होने के कारण मेरे पापा जी ने प्रत्येक सप्ताह दो दीवाना खरीदने का निश्चिय किया है। दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। ऊपर के चित्र को देखते ही हम सभी लोगों की हँसी छूट गई। मोटू-पतलू एवं फैन्टम बहुत ही रोचक लगे। दीवाना फ्रेंडस क्लब के द्वारा बनाए गए एक मित्र से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने मेरी खूब आवभगत की एवं भोपाल शहर घुमाया। दीवाना भविष्य में उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचे यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

कमलेस कुमार श्रीवास्तव—पन्ना

मुझे दीवाना का हर अंक बहुत रोचक लगता है लेकिन इस अंक में मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल के नए कारनामों को पढ़ कर बहुत खुशी हुई। इस अंक की सभी सामग्री एक दूसरे से बढ़कर थी, उम्मीद है कि अगला अंक जून १६८० का इससे भी ज्यादा रोचक होगा।

कुलदीप कुमार पाठक—साहुकारा बरेली

मुख पृष्ठ पर

चिल्ली की हर बात निराली
अक्ल चाहे हो जिसकी खाली
सिखलाता है उसको काम
जग में रोशन हो जाये नाम
ट्रेनिंग हुई मीशा की पूरी
तय कर गया लम्बी दूरी
सफल हुई मेहनत चिल्ली की
राह पकड़ी सीधी दिल्ली की

अंक : ११ वर्ष : १६
१५ जून १६८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ वार्षिक: ४८ द्विवार्षिक:

राजनैतिक पार्टियों के चुनाव चिन्हो के साथ छेड़छाड़
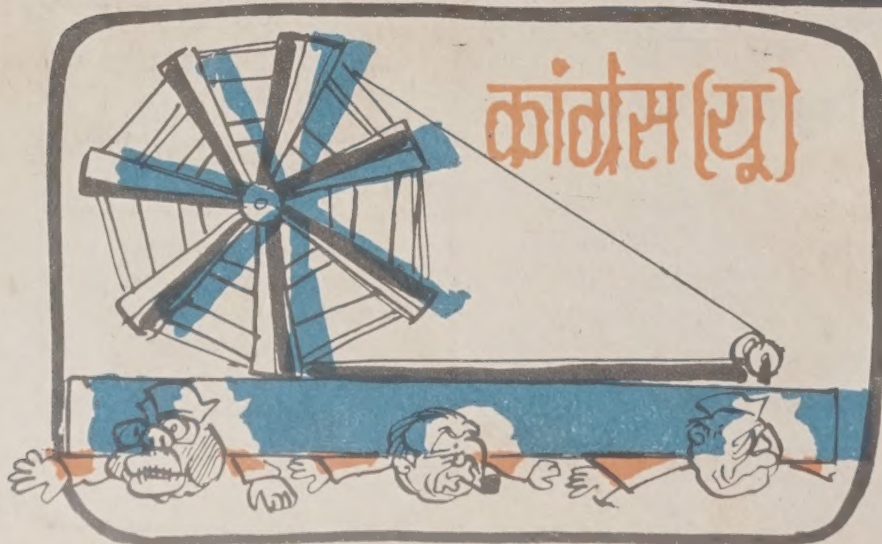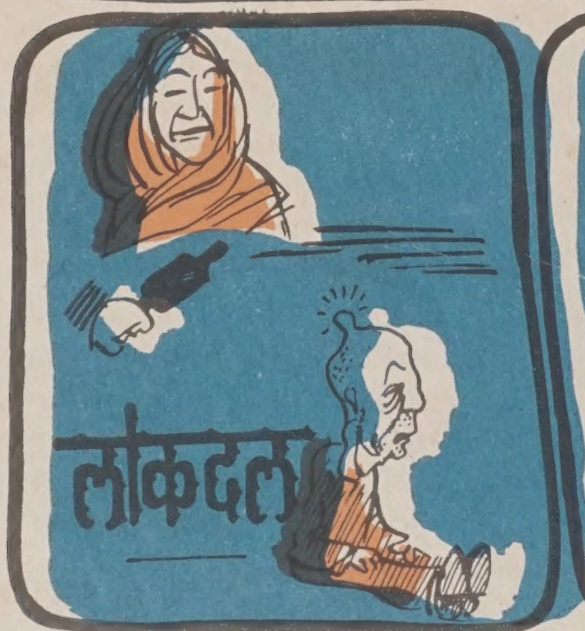
ये रह गए अकेले

लोग अन्दोलन चलाते हैं, जिहाद छेड़ते हैं, पार्टियां बनाते हैं, क्लब बनाते हैं सब का एक ही उद्देश्य है-अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित करना। क्यों न इस भेड़चाली परम्परा को तोड़ा जाये और कुछ ऐसे आन्दोलन चलाये जायें या क्लब खोले जायें जहां खेलने वाले के सिवा कोई और झांकने भी न आये? कुछ ऐसे अनोखे क्लब अथवा समितियों की कल्पना प्रस्तुत है।
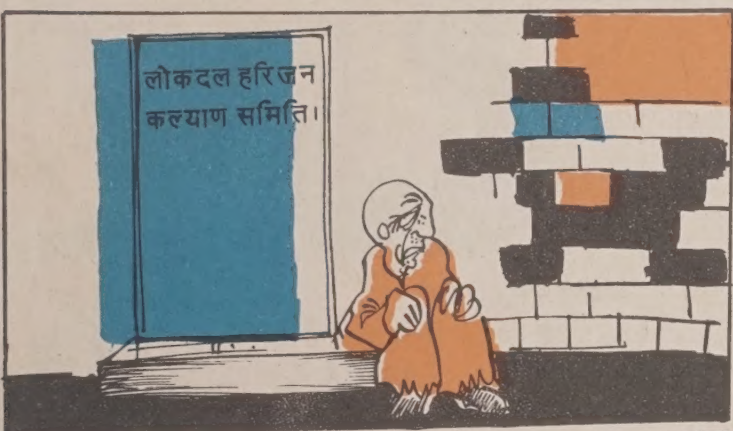
देवेन्द्र कुमार सुभाषनगर—नई दिल्ली

प्र० : काकीजी ने प्रेम पत्र लिखकर हमारा फोटो मंगवाया है ?

उ० : फोटो अपना भेज दो, उस पर होगी शोध
अच्छा हो यदि चौखटा, रख लें तुमको गोद।

मोहम्मद सलीम अमीनी, इलाहाबाद

प्र० : प्रेमिका की अमृतमयी वाणी विष का रूप कब धारण कर लेती है ?

उ० : नहीं ठहरती प्रेमिका इक प्रेमी के पास,
जैसे भावे भैंस को, नई- नई नित घास।
नई-नई नित घास, दिखाती तिरछी अखियां,
मिश्री सी मीठी, बन जातीं खट्टी बतियां।

विनोद कुमार, अमृतसर

प्र० : बिल्ली रास्ता काट जाय तो अशुभ मानते हैं,
चिल्ली रास्ता काट दे तो ?

उ० : बिल्ली काटे रास्ता, घर वाली खो जाय।
चिल्ली काटे रास्ता 'दीवाना' हो जाय।

बैजनाथ प्रसाद आनन्द कर—गोरखपुर

प्र० : किसी को अपना बनाने के लिए क्या करना चाहिए ?

उ० : पहले उसको डालिए, मीठे लवलैटर,
मतलब हल हो जाए तब बदल देउ मैटर।

बी० एस० बेदी, कोर्ट रोड—मोगा मंडी

प्र० : उड़ जाता है माशूक रंगोरूप दिखाकर,
दिल को चुरा ले जाता है दीवाना बनाकर।

उ० : वह चोर है, यह जानकर भी हुस्न पर मरते,
ताला लगा के दिल का तुम क्यों नहीं रखते ?

अब्दुल रशीद सातीर, संतोषपुर

प्र० : स्व० जयप्रकाश नारायण को जनता पार्टी ने क्या दिया ?

उ० : जय प्रकाश को स्वर्ग में, दिया खुशी का तार,
पहली पार्टी एक थी, आज हो गईं चार।

बाबूलाल गौतम, पीलीभीत

प्र० : इंदिरा की सरकार कितने समय तक जमी रहेगी,

उ० : 'आई' सो आई, अब नहीं जाई,
इसके ही अन्दर में, डटे रही भाई।

रघुवीर विजय वर्णीय, बारां (कोटा)

प्र० : प्रेमिका के नयनों के तीर से दिल घायल हो गया है,
इलाज बताइये काका ?

उ० : दोस्त दिल के जख्मों पर, क्या लगायेंगे मरहम,
दोस्तों को क्या मालूम, जख्म कितने गहरे हैं।

बलविन्द्र कुमार सोढी, करनाल

प्र० : बाढ़ या सूखा पीड़ितों की सहायता तो सरकार करती है।
पत्नी पीड़ितों का मददगार कौन है ?

उ० : सूखे-भूखे की सहायता करती भोजन की थाली
पत्नी पीड़ित की पीड़ा, हर सकती हैं सलहज-साली।

श्रीमती प्रभाती-बेलनगंज, आगरा

प्र० : कमरे में पंखा लगा हुआ है, लेकिन बिजली नहीं आती, क्या करें ?

उ० : घबराइए मत, उस समय यह आजमाइए,
पंखे के नीचे बैठकर गर्दन हिलाइए।

नीता थापा, देहरादून

प्र० : यदि कोई लड़का कुछ दिन प्रेम करके लड़की को छोड़ दे तो ?

उ० : ऐसे प्रेमी-पूत का यह इलाज है नेक,
जिस दिन वह दूल्हा बने, मारो चप्पल फेंक।

अश्वनी शर्मा, लुधियाना (पंजाब)

प्र० : दोस्त से दोस्ती निभाई लेकिन मतलब निकल जाने पर हमको भूल गया ?

उ० : सोच समझकर लव करो, मतलब का संसार
स्वारथ पूरा होय तब, ठोकर मारें यार।

डा० रघुवीर प्रसाद मेहता, इलाहाबाद

प्र० : सुना है, गर्मियों में आप कवि सम्मेलनों में नहीं जाते तो फिर क्या करते हैं उन दिनों ?

उ० : 'कमला कैसिल' मसूरी में लेते हम रैस्ट,
हास्य बैटरी चार्ज का यही तरीका बैस्ट।

किशोर माटा, रेवाड़ी

प्र० : देने वाले ! किसी को गरीबी न देना,
मौत देना, पर बदनसीबी न देना।

उ० : किसी को भी बीमारी टी० बी० न देना।
कड़ाकू-लड़ाकू सी, बीबी न देना।

अख्तर हुसैन मोहम्मद तौफीक—बम्बई

प्र० : आजकल इन्सान अधिकतर किससे डरते हैं ?
बीवी डरें मुटापे से, बाबू डरें बुढ़ापे से,
टैक्सचोर या भ्रष्टाचारी, डरते रहते छापे से।

अहमद अली खिलजी, एवं हरीकिशन, बीकानेर

प्र० : आजकल कौनसा फिलमस्टार टॉप पर है ?

उ० : इसका उत्तर सहज है, कहने से क्या लाभ,
हीरों में हीरो बड़ा, प्रिय बच्चन अमिताभ।

सरवर एजाज, इलाहाबाद

प्र० : दिल पर काबू नहीं रखा जा सके तो ?

उ० : नहीं रख सके दिल पर काबू, कामदेव को कैसे दाबूं,
दस बच्चों के फादर बनकर परेशान अध बूढ़े बाबू।

केवल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : सवाल पूछने में बुद्धि चाहिए या उत्तर देने में ?

उ० : प्रश्न करने, आपकी सी अक्ल हमको चाहिए,
काकी हो यदि पास में, उत्तर भी अच्छा पाइए। •

रोशन व्यास त्यागी, इंदौर

प्र० : आपका जन्म कब हुआ, शादी कब हुई, और पहला बच्चा ?

उ० : सन छः का तो जन्म है, छब्बीस में था ब्याह,
पहला बच्चा पेट में, मिली तीस में थाह।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

मीना को रेखागणितसे नफरत थी

मीना रेखागणित से जितनी घबराथी थी, उतनी किसी भी विषय से नहीं.
उसे रेखागणित विषय बड़ा निरस लगता था और न्यून कोण, अधिक कोण, चतुर्भुज और आयत की बातें उसको समझ ही नही आती थी, वह बहुत परेशान थी.
और फिर अचानक उसमें बदलाव आ गया. उसके भाई राजूने उसे पीले—नारंगी रंग का चमकीली धारियोंवाला कम्पास बॉक्स लाकर दिया.
मीना को उस बॉक्स और उसके उपकरणोंसे प्यार हो गया. उस रात उसनें सपने में देखा कि वह एक त्रिभुज के ऊपर चढ़ रही है, एक गोले के अन्दर नाच रही है और एक स्केल पर खड़ी संतुलन कर रही है! उसे बहुत ही मजा आया!

अब मीना को रेखागणित से बहुत प्यार है।
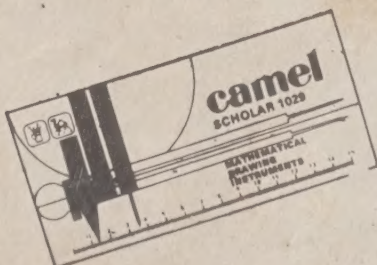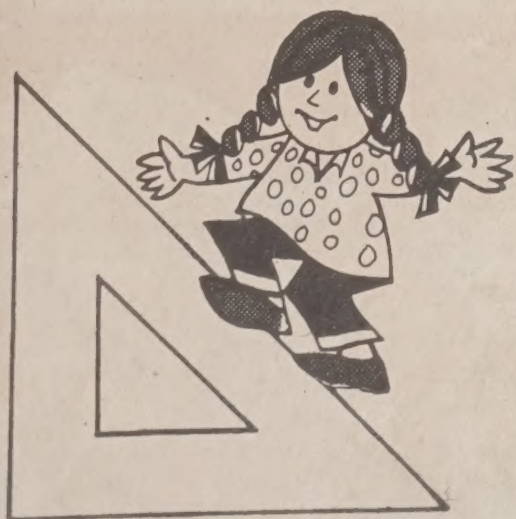
कॅमल

इन्स्ट्रूमेन्ट बॉक्स
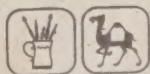
कॅम्लिन प्रायव्हेट लि.
आर्ट मटीरियल डिविजन
बम्बई - ४०० ०५९.

कॅम्लिन अनब्रेकेबल पेन्सिल बनानेवालों की ओर से

VISION 794 HIN

लोग मंजन कह कर राख बेचते हैं और पैसा कमा लेते हैं। मोटू-पतलू ने पिछले दिनों ईमानदारी से रुपया कमाने के लिए ग्रीन होटल खोला, तो रुपया गंवा कर बदनामी मोल लेकर घर आ बैठे। होटल बन्द कर के एक पार्क में बैठे अपनी किस्मत का मातम मना ही रहे थे कि वहां एक फिल्म प्रोड्यूसर आ पहुंचा।

हां इतना बता दो, लेन-देन का क्या हिसाब रहेगा ?
नुक्सान तुम्हारा। खर्चा निकाल कर कमाई का आधा-आधा।
नुक्सान तुम्हारा ।
हां-हां । नुक्सान तुम्हारा ।
और हीरो बनने के रुपये ?
हीरो बनने के पांच हजार रुपये। अभी तुम्हारी पहली फिल्म है इसलिए हम इससे ज्यादा नहीं दे सकते ।
जब धर्मेन्द्र, अमिताभ बच्चन और संजीव कुमार बनकर चमकूंगा तब तो दोगे ?
जरूर देंगे ।

तो मुझे तुम्हारी शर्तें मंजूर हैं ।
मंजूर हैं तो करो कांट्रेक्ट पर हस्ताक्षर ।
लो कर दिये हस्ताक्षर ।
अब तुम हमारी फिल्म कम्पनी में पार्टनर बन गये । लाओ निकालो पार्टनरशिप के कांट्रेक्ट की रकम ।
अपना मकान और गांव की जमीन बेच कर कल आपके पास उस होटल में पहुँचा दूंगा जहाँ आप ठहरे हैं ।

फिर सोच लो तुम घर फूंक तमाशा देख रहे हो।
कांट्रेक्ट पर हस्ताक्षर कर दिये अब सोचना क्या है । जिस घर के फुंकने का डर है उसे फुंकने से पहले ही बेच रहा हूं ।
वादे के अनुसार घसीटाराम ने अपना घर और गांव की जमीन बेची और रुपये लेकर डायरेक्टर प्रोडयूसर डी० बी० खोपड़ा के होटल की ओर चला तो मोटू-पतलू और डा० झटका उसके पीछे-पीछे थे ।
तुम राहू केतू बनकर मेरे पीछे क्यों लगे हो ?
तुम्हें मुसीबत से बचाने के लिए

होटल पहुंच कर ढाई लाख की रकम घसीटाराम ने प्रोड्यूसर, डायरेक्टर डी० बी० खोपड़ा को थमा दी ।
वादे के पक्के हैं आप ।
अजी साहब यह तो कुछ भी नहीं । आगे-आगे देखिए मैं क्या चीज हूं । शूटिंग की डेट पर भी मैं समय पर पहुंचने में अशोक कुमार और प्राण को मात दे दूंगा ।

फिल्म में एक हीरो ही तो नहीं होता । और भी तो बहुत कुछ होता है । हमें भी कहीं फिट कर लीजिए आप ।
जरूर फिट करेंगे तुम्हें । क्या नाम है तुम्हारा ?
मेरा नाम मोटू है । यह हैं पतलू और डाक्टर झटका ।
डाक्टर की तो हमें बहुत जरूरत पड़ेगी । हीरो नया-नया है और विलेन सूपर मैन हार्सपावर है । क्या पता है शूटिंग के समय कब हीरो की हड्डी पसली का चूरा हो जाये ।

कोई बात नहीं देख लेंगे । हिन्दुस्तानी फिल्मों का एक हीरो चोटी के बीस गुंडों को चुटकी में मसल देता है । यह हार्सपावर सूपर में क्या मुकाबला कर पायेगा घसीटा दी ग्रेट एक्स्ट्रा सुपरपावर मैन का ।

हमारी फिल्म की पहली शूटिंग का शैडयूल मैसूर के जंगलों का है । तुम घसीटाराम के साथ ही आज की पहली गाड़ी से मैसूर के लिए रवाना हो जाओ । गाड़ी का किराया घसीटाराम से ले लेना ।
मुझ से क्यों ले लेना ।
तुम फिल्म के पार्टनर हो । इन छोटे-मोटे खर्चे का हिसाब फिल्म बनने पर हो जाएगा ।
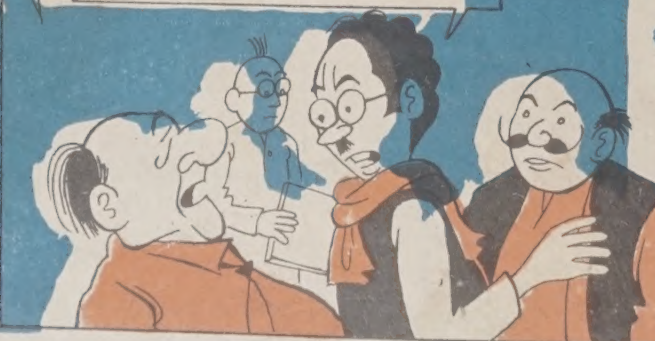
होटल से लौटते समय ।
फिल्म के फाईनेंसर हो, फिल्म के यूनिट के साथ हमें लोकेशन शूटिंग पर ले जाते समय छोटे-छोटे खर्चों से घबरा रहे हो । फाईनेंसर को तो अपने यूनिट को माल-टाल खिला कर बहुत खुश रखना पड़ता है ।
कैसे मनहूसों से पाला पड़ा है । शहर बसा नहीं और भिखारी पहले से आ गये । चलो कोई बात नहीं, फिल्म लाईन में हर प्रकार के आदमियों की जरूरत होती है । उनमें सबसे काम का आदमी होता है हीरो का चमचा । इन्हें क्यों ना अपना चमचा बना लूं ।
देख लो, तुम्हें मेरी वजह से फिल्म में काम मिला है ।
सच्ची बात तो यही है घसीटा राम ।
फिर तो तुम्हें मेरा आभारी होना चाहिए ।
तुम्हारे आभारी हैं । समझ नहीं आता किन शब्दों में हम तुम्हें धन्यवाद कहें ?
शब्द ढूंढ़ने के लिए मैं तुम्हें मोटे से मोटा शब्दकोश दे दूंगा । मेरे एहसान का बदला चुकाना है तो मेरा एक काम करो ।
वह क्या ?
तुम मेरे चमचे बन जाओ ।
हम तुम्हारे चमचे बन जायें ।
आज फिल्मी दुनिया में कामयाबी का यही एक राज है । दलीप कुमार, संजीव कुमार, राज कुमार राकेश रोशन, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, विनोद मेहरा राज कपूर, शशि कपूर, शम्मी कपूर, शेखर कपूर, धर्मेन्द्र, अमिताभ बच्चन, इन सब के अपने-अपने चमचे हैं । अपने चमचों ही की बदौलत यह आसमान के चमकते सितारे बने । चमचे न होते तो आज यह कड़छे किसी भी फिल्मी हांडी में नजर न आते ।
इसके लिए तुम हमें क्या दोगे ?
मैं क्या दूंगा ? शुभ कामनायें । जानते नहीं, धर्मेन्द्र के चमचे ने अपनी अलग फिल्म बना ली । शशि कपूर और संजय खां के चमचों ने डिस्ट्रीब्यूशन आफिस खोल लिए । अशोक कुमार के चमचे ने म्यूजिक इन्स्ट्रूमैंटस का स्टोर खोल लिया । राजेश खन्ना आज फुट पाथ पर खड़ा है, पर उसके चमचे आज पता नहीं कहां-कहां खीर के कटोरों में पड़े हुए हैं ।
इसी तरह तुम मेरे चमचे बन गये तो मैं तो तुम्हें क्या दूंगा । एक दिन तुम ही मुझे कुछ देने के काबिल बन जाओगे ।
मतलब है अभी गुरुद्वारे से खाना खा कर मुफ्त में तुम्हारा काम करना होगा ।
काम है ही कितना । बस हर जगह मेरी तारीफ करनी होगी । जहाँ जाओ कहो, आज घसीटाराम से अच्छा हीरो कोई है ही नहीं । घसीटाराम की पर्सनैलटी और डॉयलाग डिलिवरी का जवाब ही नहीं ।
घसीटाराम की हर आने वाली फिल्म हिट जाएगी । कोई गुरुदत्त की एक्टिंग की तारीफ करे तो कहना वह क्या खा कर एक्टिंग करेगा घसीटाराम के सामने ।
पर गुरुदत्त तो मर चुका ।
तो सुनील दत्त से मेरा मुकाबला कर देना वह तो नहीं मरा है ।
और हर जगह कहना घसीटाराम एक दिन संजीव कुमार विनोद खन्ना, विनोद मेहरा, बिन्दिया गोस्वामी, सबको पीछे छोड़ जायेगा ।
बिन्दिया गोस्वामी को भी ! क्या तुम घसीटा गोस्वामी बन कर हीरोईन का रोल भी करोगे ?
मतलब है जब मैं बड़ा हीरो बन जाऊंगा तो बिन्दिया गोस्वामी के माथे की बिन्दिया विनोद मेहरा की बजाये घसीटा दी ग्रेट होगा ।
फिर तुम समाचार पत्रों को दाना डालना । उन्हें कॉकटेल पार्टियां देना । जीनत अमान और प्रवीन बाबी के साथ मेरे रोमांस के स्कैंडल पत्र पत्रिकाओं में छपवाना, फिर कहना प्रवीन बाबी फिल्म लाईन छोड़ देगी । इंडिया छोड़ देगी । पर घसीटाराम को नहीं छोड़ेगी । घसीटाराम के पीछे पागल होकर उसने सब फिल्मों की शूटिंग कैंसल कर दी ।
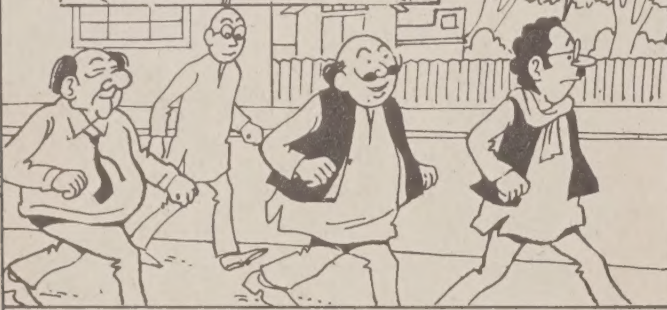
मैसूर जाने वाली गाड़ी में सवार होने के बाद।

भूख लगी है प्रोड्यूसर साहब। डायनिंग कार से चाय और कुछ नाश्ता मंगवाइए।

बिल्कुल भुक्खड़ों से पाला पड़ा है। एक तो मैं फिल्म का को-प्रोड्यूसर। दूसरे फाईनेंसर, तीसरे हीरो, और चौथे यह मेरे चमचे। इनके नाज तो मुझे उठाने ही होंगे

मैं तो मुर्गा खाऊंगा!

घसीटा राम का भी जवाब नहीं।

खाने पर ऐसे टूट रहे हो, जैसे कभी कुछ खाया नहीं। चमचों का क्या काम होता है, यह मत भूलना।

फिलहाल तो हमें चमचों से खाना खाने दो और तुम हमारी थालियां पकड़े रहो।
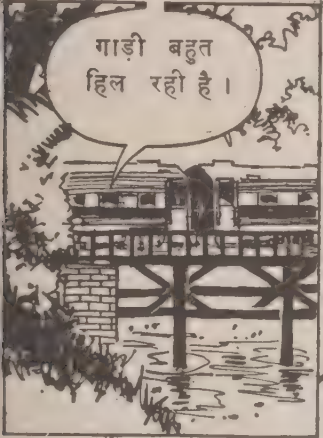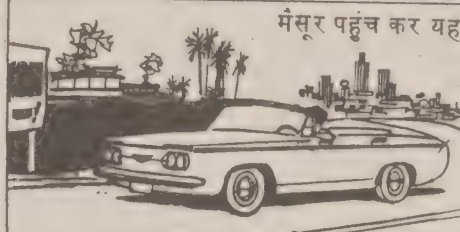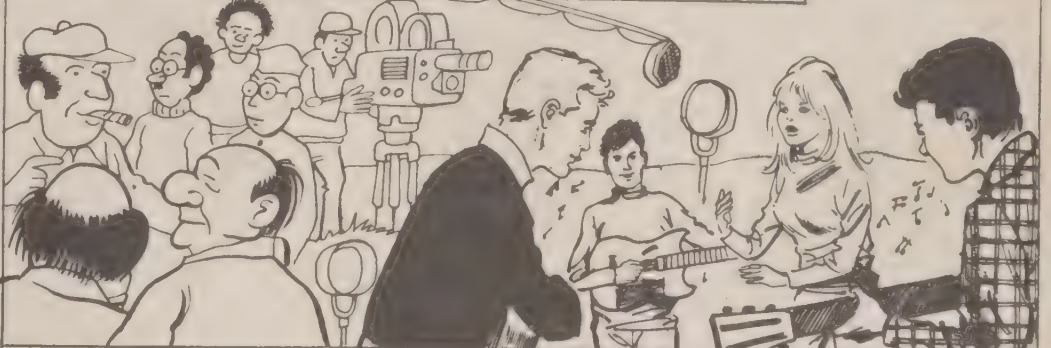
हीरोइन कौन है मेरे साथ, जीनत अमान या परवीन बाबी?

हीरोइन का फैसला तो कर लिया है। अब यह सोचना बाकी है कि तुम्हारा फिल्मी नाम क्या रखा जाये।

मेरा नाम घसीटाराम क्या बुरा है?

क्या घिसा-पिटा नाम है। फिल्मी नाम के साथ तो होना चाहिए कुमार, कपूर, या खन्ना। तब नाम में जान पड़ती है। जैसे मोहम्मद यूसुफ का फिल्मी नाम है दलीप कुमार। ऐसे ही अशोक कुमार की तरह तुम्हारा नाम अचूक कुमार कैसा रहेगा?

बड़ा धाँसू नाम है बाँस, अचूक का मतलब है, जिसका निशाना कभी न चूके।

क्या निशाने बाजी या चांद मारी की कोई फिल्म बना रहे हो?

चांदमारी ही समझो। हमारी फिल्म जंगल एडवेंचर में मार-धाड़ पर आधारित है।

नाम क्या रखा है फिल्म का?

फिल्म का बेनर बन कर आ गया है। इसे देख लो।

फिल्म में जम्बू की बेटी का दूसरा लवर यानी तुम्हारा राईवल है, प्रेम थोबड़ा। फिल्म में इसका नाम है जगदम्बू। फिल्म में बार-बार फाड़कफन की जगदम्बू से लड़ाई होती है। और हर बार फाड़कफन जगदम्बू की खाल में भुस भर देता है।

यह मेरा कफन फाड़ कर रख देगा, यह उल्टी पट्टी क्यों पढ़ा रहे हो तुम मुझे।

चलो, अब अपने-अपने डायलाग याद करो और मेकअप करके फिल्म की शूटिंग के लिए तैयार हो जाओ।
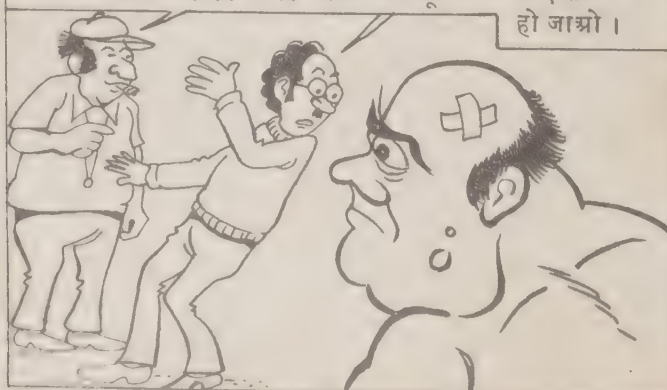
क्यों बे फाड़कफन ! तेरे ख्यालों में यह क्या है?

मेरे ख्यालों में वो है, जिससे मुझे कोई जुदा नहीं कर सकता ।

मैं जुदा करके दिखाऊंगा कफन चोर !
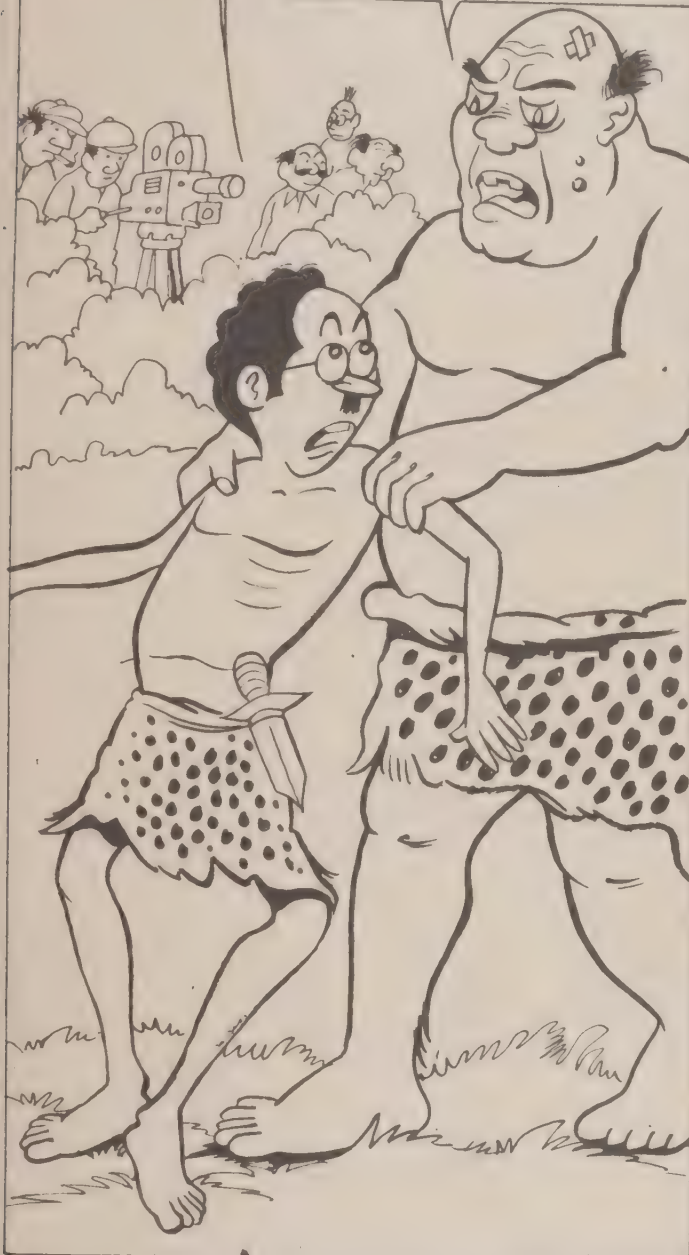
शूटिंग रोक कर । सारे सीन का सत्यानाश कर दिया ।

यह मेरे हाथ का सत्यानाश करके हड्डियां तोड़ डाल रहा है, तुम सीन की बात करते हो ।

फिल्मों की फाईट में शुरू-शुरू में ऐसा ही होता है । अंत में विजय हीरो की होती है । तुम कुछ थोड़ा सा बर्दाश्त करो और अपने रटे हुए डायलाग बोलो । अन्त में हम तुम्हारी विजय दिखायेंगे ।
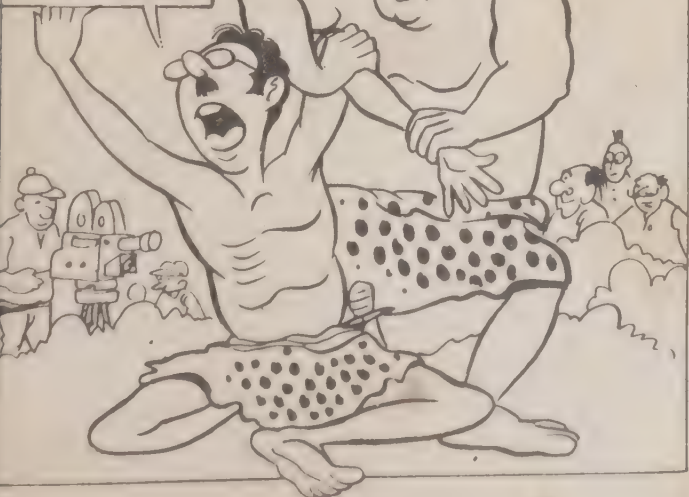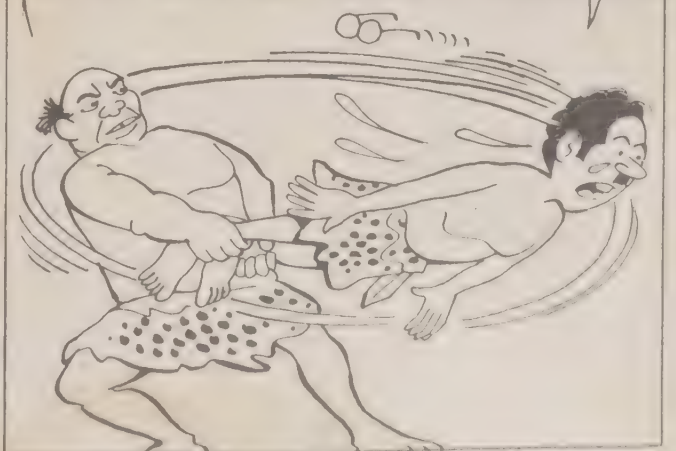
आज कहेंगे दिल का फसाना
जान भी ले ले चाहे जमाना ।
जम्बू की बेटी साथ है अपने
आँखों में आंसू भरना क्या,
जब प्यार किया तो डरना क्या
उनकी तमन्ना दिल में रहेगी,
शमा इसी महफिल में जलेगी ।
शुक्र मना मैंने दी नहीं गाली,
कर लेता तू मेरा वरना क्या,
जब प्यार किया तो डरना क्या ।
ज…ज…ज
…जब…!
बस । अब लड़ाई के अंत में विजय फाड़कफन की दिखानी है । जगदम्बू तुम मरे हुए से नीचे लेट जाओ । फाड़कफन इस पर पांव रखकर खड़ा होगा ।
ठीक है ऐसे । ऊपर उठाये रखो फाड़कफन को, इसने जगदम्बू को फ्लैट कर दिया है । बड़ा अच्छा सीन बना है ।
फाड़कफन की एक-एक हड्डी चुरमुरा रही है । और यह कह रहे हैं जगदम्बू फ्लैट हुआ है ।
अब डायलाग बोलो । अबे ओ जगदम्बू के बच्चे, फिर मेरे और जम्बू की बेटी के बीच आया तो तेरे पेट में करले का मसाला भर दूंगा ।
म…म…मैं मसाले में करेला भर दूंगा ।
अगर तू मेरे और जम्बू की बेटी के बीच आया तो ।
अगर तू मेरे और मेरी बेटी के बीच आया तो ।

अरे यह क्या अनाप शनाप डायलाग बोल रहा है अचूक कुमार । अगले सीन के लिए चबाना आजमी को लाओ । वह इसकी बहादुरी पर गर्व करेगी ।
मेरे प्यारे फाड़कफन, तुम कितने अच्छे हो । तुमने जगदम्बू का कचूमर निकाल कर कितनी बहादुरी का परिचय दिया है ।
क्या कहा । क्या किसी ने शबाना आजमी का नाम लिया ।
मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं ।
शबाना आजमी मुझ से प्यार करती है ।
अबे अचूक कुमार के घसीटू कुमार, यह शबाना आजमी नहीं चबाना आजमी है । तुझे कच्चा चबा जायेगी ।
तुम पैनिक मत फैलाओ । फिल्मों में ऐसा ही होता है । अन्दर कुछ और बाहर कुछ, पर्दे पर कुछ और पर्दे के पीछे कुछ । आखिर में एक राजकुमार इसे चूमेगा तो यह सुन्दर हो जाएगी ।
और आखिर तक हमारा हीरो अचूक कुमार इसी तरह बेहोश ही रहे तो अच्छा है । उसने अपनी हीरोइन को जीती जागती आँखों से देख लिया तो नजरों की बीनाई खो बैठेगा ।
मेरी प्यारी शबाना आजमी ।
हां मेरे प्यारे कफन के टुकड़े ।
आगामी अंक में इस फिल्म की अगली शूटिंग का अगला भाग अवश्य देखिये ।
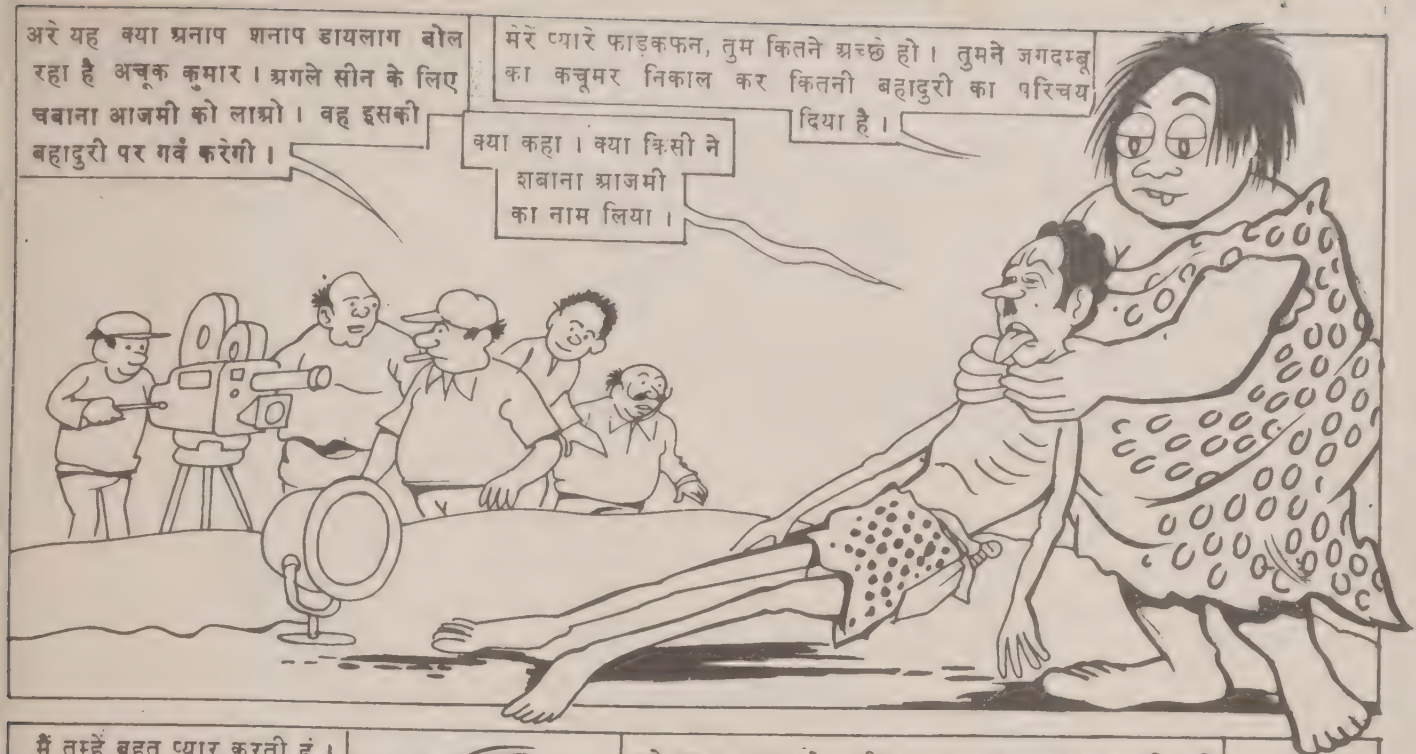
भाग-१

छुट्टी का दिन था। गैराज के ऊपर बने क्वार्टर में राजू, महिन्दर तथा श्याम सुबह-सुबह ही इकट्ठे हुए थे। तीनों सहपाठी थे और प्रायः साथ ही रहते थे। उनके साथ रहने का मुख्य कारण सहपाठी होना नहीं था बल्कि तीनों का जासूसी में रुचि होना था। राजू के पिता पुलिस कमिश्नर थे, महिन्दर के पिता फौजी कर्नल थे, श्याम के पिता व्यापारी थे। तीनों की आयु पन्द्रह सोलह वर्ष के बीच होगी। इन तीन युवा जासूसों ने राजू के पिता को चंद बार कुछ केसों की गुत्थियां सुलझाने में अपना योगदान देकर शाबासी प्राप्त की थी। खुश होकर कमिश्नर साहब ने उन्हें अपने स्वतंत्र प्रयोग के लिए गैराज के ऊपरवाला एक छोटा-सा क्वार्टर दे दिया था। उसी क्वार्टर को वे अपना हैडक्वार्टर कहते थे। हैडक्वार्टर में एक टेबल, लैम्प, पुरानी दो कुर्सियां, एक अलमारी थी, जिसमें एक पुरानी दूरबीन, लेंस तथा दो तीन फायलें रखी थीं। जिसमें उन्होंने अपने अब तक हल किए दो केसों का रिकार्ड दर्ज कर रखा था। श्याम ने अपने पिता के एक मित्र से कुछ विजिटिंग कार्ड भी छपवा रखे थे जो इस प्रकार था—

तीन जासूस
हम हर पेचीदा गुत्थी सुलझाते हैं।
राजू-महिन्दर-श्याम।

यों तो कमिश्नर साहब को अपने बेटे पर गर्व था लेकिन वह हमेशा चेतावनी देते थे कि फिजूल में वे किसी खतरनाक केस में न उलझें और उन केसों को तो हाथ भी न लगायें जो पुलिस के अधिकार क्षेत्र में आते हों।

इस समय राजू रविवार का समाचार पत्र पढ़ रहा था। महिन्दर एक कुर्सी पर व श्याम टेबल पर ही बैठा था! पढ़ते-पढ़ते अचानक राजू बोला, "तुम दोनों में से कभी कोई होटल की नीलामी में गया है ?"

महिन्दर ने इन्कार में सिर हिलाया! श्याम ने न की।

"मैं भी नहीं गया हूं," राजू ने कहा, "लेकिन मुझे पता है कि वहां क्या होता है। जो लोग होटल में अपना सामान छोड़ गायब हो जाते हैं और फिर लौट कर नहीं आते उनके सामान की नीलामी होटल वर्ष के अन्त में करते हैं। सामान बन्द का बन्द नीलाम होता है। जैसे बंद सूटकेस है तो उसकी वैसे ही नीलामी होगी। किसी को पता तो नहीं होता कि अन्दर क्या है। कई बार बोली लगाने वाले कीमती सूटकेस देख ऊंची बोली लगाकर ले जाते हैं और अन्दर केवल पत्थर व पुराने अखबार निकलते हैं। आज मेवा होटल में नीलामी है चलो चलें।"

'क्यों ?" महिन्दर ने नाराजी जाहिर की। "किसी और के कपड़ों वाला सूटकेस लेकर क्या करेंगे हम ?"

श्याम ने भी सहमति प्रकट की, "चलो किसी अंग्रेजी फिलम का मार्निंग शो देख आते हैं।"

राजू अध्यापकों के लहजे में बोला, "हमें नये-नये अनुभव प्राप्त करने चाहिएं। नये अनुभवों से जासूसी के काम में मदद मिलेगी! हमारे सामान्य ज्ञान का क्षेत्र बढ़ेगा।

कुछ ही देर में तीनों साइकिलों पर मेवा होटल पहुंचे तो अहाते में छोटी सी भीड़ थी। एक मोटा सा आदमी बेंच पर खड़ा होकर अपने नीचे रखे सूटकेसों और ट्रंकों के ढेर को जल्दी से जल्दी नीलाम कर निबटाने की कोशिश कर रहा था। इस समय वह सबसे ऊपर रखे सूटकेस की नीलामी कर रहा था ?

"बढ़िया सूटकेस है साहब···जल्दी बोलिये···पच्चीस—पच्चीस··पच्चीस एक पच्चीस दो···पच्चीस तीन! सूटकेस लाल टाई वाले साहब का हो गया। निकालिये जनाब पच्चीस रुपये और ले जाइये अपना सूटकेस।"

नीलामी करने वाले ने बेंच पर हथौड़ा मारा। और नीलामी के अगले नग की ओर मुड़ा।

"अब माल नम्बर २२ की बारी है" वह चटका, "भाइयों और बहनों एक बहुत ही रोचक चीज! जरा ऊपर उठाकर सबको दिखाना प्यारे।" पास खड़े मजदूर से दिखने वाले व्यक्ति ने एक पुरानी फैशन का लकड़ी का सन्दूक उठा कर बेंच पर रखा। श्याम बुड़बुड़ाया। गर्मी सूरज चढ़ने के साथ ही बढ़ने लगी थी। उसे इसकी नीलामी में कोई रुचि नहीं थी।

चलो चलें यार "श्याम ने अपने साथी राजू का कंधा थपथपाया।

"थोड़ी देर ठहरो।" राजू फुसफुसाया, "यह सन्दूक सचमुच अजीब है। मैं बोली लगाऊंगा।"

"दिमाग खराब हो गया है तेरा ?" श्याम ने उस पिटे पिटाये पुरानी सन्दूकड़ी को देखते हुए कहा।

"कुछ भी कह लो! मैं एक बोली जरूर लगाऊंगा! इसमें से जो निकलेगा हम तीनों का बराबर-बराबर।" राजू ने कहा!

"इसमें से क्या निकलेगा ? बाबा आदम के जमाने के कपड़े।" महिन्द्र ने व्यंगपूर्वक कहा।
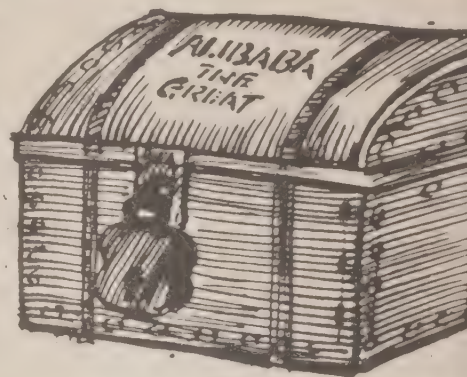
संदूक सचमुच बाबा आदम के युग का लग रहा था। घुन लगी लकड़ी पर जंग लगी लोहे की दो पत्तियां। ऊपर का ढक्कन गोलाई लिए था।

नीलामी वाला चिल्लाया, "भाइयों, मैं आपका ध्यान इस नायाब सन्दूक की ओर दिलाना चाहता हूं।" हो सकता है यह कोई ऐतिहासिक सन्दूक निकले। यह भी हो सकता है इसमें किसी राजा महाराजा के हीरे मोती भरे हों।"

उसकी बात पर लोगों में हंसी की लहर दौड़ गई।

राजू ने अपने मित्रों के कान के पास कहा, "मुझे तो यह किसी बहुरुपिये का संदूक लगता है। वैसे ही जैसे नौटंकी वाले अपना ड्रैस रखने के लिए प्रयोग में लाते हैं।"

महिन्दर ने टोका, "चलो यार यहां से खिसको। नौटंकी वालों के कपड़े लेकर हमें क्या करना है ?"

नीलामी वाला अब भी चिल्ला रहा था, "भाइयों पचास साल पुराना टिकट हजारों रुपयों में बिकता है तो हो सकता है आपको यह लाखों रुपये दे जाए। हां तो लगाइये बोली...।"

भीड़ में से कोई न बोला ! कोई पुराने सन्दूक का ग्राहक नहीं था शायद। नीलामी वाला परेशान सा हुआ, "लगाइये बोली इस बेशकीमती संदूक पर ! कोई तो..."

राजू एक कदम आगे बढ़ा, "दो रुपये।"

"दो रुपये !" नीलामी वाले ने मुस्करा कर राजू की ओर देखा, "यह अक्लमन्द लड़का दो रुपये बोली दे रहा है। हीरे को जौहरी ही पहचानता है। मैं इसकी बुद्धिमानी की दाद देता हूं। भाइयों जानते हो मैं क्या करने वाला हूं ! मैं इस लड़के की अक्लमंदी को इनाम दूंगा ? एक, दो, तीन ; हो गया यह नायाब बक्सा इसका सिर्फ दो रुपये में।" और उसने जोर से हथौड़ा बेंच पर मारकर संदूक की नीलामी खत्म होने का ऐलान किया।

भीड़ में कुछ लोग मुस्कराये ! कोई और, उस पुराने संदूक को नहीं लेना चाहता था। और नीलामी वाला भी यह जानता था और ज्यादा वक्त जाया नहीं करना चाहता था।

ठीक उसी समय भीड़ में कुछ हलचल हुई। एक बुर्का धारी महिला भीड़ चीर कर आगे आने का प्रयास कर रही थी।

जरा ठहरो,वह बुर्के में से ही चिल्लाई, "मैं इस सन्दूक पर बोली देना चाहती हूं दस रुपये...दस रुपये।"

सबकी निगाहें बुर्के की ओर मुड़ीं। चेहरों पर उत्सुकता के भाव उभर आये कि कोई ऐसे बेकार संदूक के क्योंकर दस रुपये दे सकता है।

नीलामी वाला बोला, "माफ कीजिए मैडम। यह सौदा हो चुका है।" बुर्के में से आवाज आई, बीस रुपये...बीस रुपये।"

नीलामी वाला चिढ़ गया, "मैडम, मैंने कहा न कि जो सौदा हो गया सो हो गया। भाई साहब दो रुपये निकालो और अपना संदूक उठाओ।" उसने राजू की तरफ देखा।

महिन्दर और राजू ने बेंच पर से संदूक उठाया। संदूक जमीन पर पटकते हुए महिन्द्र ने मुंह बिचकाया, "इसमें मरे हुए चूहे के अलावा और क्या होगा। हां तो क्या करें इसका ?"

"अपने हैडक्वार्टर ले जाकर खोलेंगे इसे" राजू ने संदूक का हैंडल पकड़ते हुए कहा।

"एक मिनट ठहरो" नीलामी वाले ने आवाज दी, "बेटे पहले दो रुपये तो जमा करो। असली चीज तो भूल ही रहे हो।"

राजू अपनी भूल पर खिसियाता हुआ नीलामी वाले के पास गया। जेब से दो का नोट निकाल उसे थमाया और रसीद प्राप्त की। नीलामी वाले ने रसीद पकड़ाते हुए सलाह दी, "बेटे अब यह तुम्हारा है। सन्दूक में कांस का खजाना निकले तो रिजर्व बेंक में जमा करना।"

राजू और महिन्दर दो ओर हैंडिलें को पकड़ भीड़ ठेलते हुए बाहर आये,वह अपनी साइकिलों के पास पहुंचे ही थे कि बुर्के वाली महिला लपकती हुई उनकी तरफ आई। "बेटे," वह बोली, "वह सन्दूक मैं तुमसे खरीदूंगी। पच्चीस रुपये ले लो। मुझे पुराने सन्दूक इकट्ठे करने का शौक है।"

"पच्चीस रुपये।" श्याम ने आंखें फैलायी।

"दे दो इसे," महिन्दर ने राजू के कान में कहा।

बुर्के वाली ने बात आगे बढ़ायी, "दो रुपये पर तेईस रुपये का मुनाफा और क्या चाहते हो ? वैसे तो ऐसे सन्दूक जामा मस्जिद में एक-एक रुपये में बिकते हैं। ले लो पच्चीस रुपये।"

उसने पर्स में से दो दस-दस के और एक पांच का नोट निकाला और राजू की ओर बढ़ाया। महिन्द्र और श्याम के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही जब उन्होंने राजू को इन्कार में सिर हिलाते देखा।

बुर्के वाली महिला ने बौखलाये स्वर में कहा, "इसमें कोई कीमती चीज नहीं हो सकती। लेकिन चलो तीस रुपये ले लो।"

राजू ने फिर सिर हिलाया, नहीं मैडम दर असल बात यह है कि मुझे यह बेचना ही नहीं है।"

महिला ने चेहरे पर से बुर्का हटा लिया और ठंडी सांस लेकर कुछ कहना ही चाहती थी कि उसके चेहरे पर घबराहट के लक्षण उभर आये उसने तुरंत बुर्का गिरा दिया और भीड़ में खो गई। शायद वह उनकी ओर आते हुये एक कैमराधारी युवकसे डर गयीथी

"अरे भाई" उस युवक ने कहा, मेरा नाम सुरेश है। मैं दैदिक भारत समाचार का संवाददाता हूं। मैं एक अनोखी समाचार कहानी की तलाश में था। मुझे तुम तीनों इस सन्दूक के साथ फोटो खिंचवाने दो। नीलामी में यही एक बिक्री मुझे कुछ अखबार लायक लगी। हां...तीनों पीछे खड़े... शाबास...क्लिक !"

फोटो खिंचवाते ही महिन्दर की नजर नीचे रखे संदूक के ढक्कन पर खुदी लिखाई पर गयी। घिसने के बावजूद खुदाई पढ़े जाने योग्य थी ! "अलीबाबा दी ग्रेट" संवाददाता ने भी फौरन देख लिया और लगे हाथ ढक्कन के क्लोजअप का एक फोटो लिया।

"धन्यवाद।" संवाददाता बोला, "क्या आप मुझे अपना नाम बतायेंगे ? और मुझे यह भी बताने का कष्ट करें कि आपने तीस रुपये की पेशकश क्यों ठुकराई ? मैं होता तो दो रुपये की चीज तीस में जरूर बेच देता।"

"हमारा ख्याल है कि यह किसी नौटंकी वाले का संदूक है" राजू ने कहा, "हम देखना चाहते हैं कि इसमें क्या है। हमने मुनाफा कमाने के लिए यह नहीं खरीदा।"

संवाददाता मुस्कराया, "तो आपका ख्याल है कि इसमें कांस ने अपने खजाने के हीरे मोतियों का कुछ भाग छुपा रखा है ?" श्याम ने उत्तर दिया, "इसमें क्या है यह तो खुदा ही जाने। लेकिन हमने केवल उत्सुकता-वश ही खरीदा है।"

"चलो ऐसा ही सही !" संवादाता मुस्कराया, "लेकिन इस संदूक पर खुदा नाम अलीबाबा दि ग्रेट कुछ अजीब सा और कुछ कहीं सुना या पढ़ा सा लगता है। तो जरा अपने नाम तो बताइये।"

राजू ने अपनी जेब से अपना वही छपा कार्ड संवाददाता के हवाले किया।

तीन जासूस
हम हर पेचीदा गुत्थी सुलझाते हैं।   राजू-महिन्दर-श्याम।

कार्ड देख संवाददाता उछल पड़ा, "तो क्या आप तीनों जासूस हैं, इस संदूक के रहस्य का पता लगाने वाले हैं। अहा ! मजेदार समाचार, कहानी मिल गई मुझे। दोस्तों अगर सम्पादक को मेरी कहानी पसन्द आई तो आप तीनों कल के अखबार में अपनी अपनी फोटो छपी देखेंगे। मैं अब चलता हूं। दफ्तर जाने से पहले मिर्च मसाला लगाकर मुझे यह कहानी तैयार करनी है।"

जाते हुए उसने हाथ हिलाया। राजू ने सन्दूक अपनी साइकिल के कैरियर से एक सुतली से बांध दिया और तीनों साइकिलों पर सवार घर की ओर चल दिये।

गैराज में साइकिल पर से सन्दूक उतारते ही वे उसे खोलने की योजना बना ही रहे थे कि कोने के भीतर से राजू की माता जी की तीखी आवाज सुनाई पड़ी, "अरे तुम तीनों शैतान सुबह-सुबह कहां आवारागर्दी करने गये थे ? नाश्ता तक नहीं खाया। हाथ धो लो और फौरन नाश्ता खा लो।"

तीनों को नाश्ते की सूचना मिलते ही महसूस हुआ कि उनका पेट सचमुच ही खाली है। सन्दूक के चक्कर में वह नाश्ता भी भूल गये थे। तीनों बिना कुछ कहे डाइनिंग रूम की ग्रोर लपके। राजू की माता जी के सामने किसी की न चलती थी। वह जासूसी वगैरह के नाम से ही चिढ़ती थी। उनकी समझ में यह भी नहीं ग्राता था कि ये तीनों लड़के गैराज के ऊपर वाले कमरे में करते क्या रहते हैं। लेकिन इस सबके बावजूद वे राजू तथा उसके मित्रों से ग्रथाह स्नेह करती थीं ग्रौर उनका स्नेह खास कर खाने की मेज पर पकवानों के रूप में बरसता था।

नाश्ता खाकर राजू ने मां से चाबियाँ मांग कर उस सन्दूक का ताला खोलने का प्रयत्न किया लेकिन कोई चाबो उसमें लगी नहीं। ताला लोहे का काफी बड़ा था, जिसे तोड़ना भी ग्रासान न था। श्याम ने सुझाया कि उसके घर में चाबियों के कई गुच्छे हैं। उनमें से बड़े ग्राकार की चाबियां लाकर ट्राई की जाय। सुझाव मंजूर कर लिया गया।

श्याम के घर में काफी सारे मेहमान ग्राये हुए थे। श्याम की मां ग्रकेली थी ग्रत. मेहमानों की सेवा सुश्रूषा में सहायता के लिए उन्हें वहीं रुकना पड़ा। छुट्टी मिली तो शाम के चार बजे ही जब श्याम के पिता काम से नौकर सहित लौटे। श्याम के पिता हाथ में दैनिक भारत समाचार का सांध्य संस्करण लाये थे। उन्होंने तीनों को समाचार दिया कि अखबार में तीसरे पेज पर उनकी फोटो छपी है।

सचमुच तीसरे पृष्ठ पर सन्दूक के पीछे खड़े पोज़ में उनकी फोटो छपी थी। सन्दूक पर लिखा "ग्रलीबाबा दी ग्रेट" फोटो में काफी साफ ग्राया था। फोटो के साथ वाले समाचार का शीर्षक था "युवक जासूस रहस्यमय सन्दूक की छानबीन में" ग्रौर कहानी व्यंग्यात्मक रूप में लिखी थी कि कैसे राजू ने सन्दूक खरीदा ग्रौर तीस रुपये में बेचने से इन्कार कर दिया। ग्रन्त में संवाददाता ने ग्रपनी ग्रोर से यह भी जोड़ा था कि युवा जासूसों को ट्रंक में रहस्यमय ग्रथवा कीमती चीज मिलने की ग्राशा है।

महिन्दर बोला, "चलो हमें पब्लिसिटी तो मिली। लेकिन लेख में हमें शेखचिल्लियों के रूप में दिखाया गया है।"

तीनों कुछ चाबियां छांटकर राजू के घर की ग्रोर लौट पड़े। समाचार के कारण उस संदूक में तीनों की उत्सुकता बढ़ चली थी। राजू के घर पहुंचे तो साथ वाली कोठी के गेट पर कुछ हलचल सी मची थी। पूछने पर पता लगा कि चोर दिन दहाड़े उनके गैराज से एक साइकिल ग्रौर दो कार के टायर चुरा ले गये थे जब कि सारा परिवार दिन में सिनेमा देखने गया था।

ग्रपनी कोठी में घुसते ही तीनों धक से रह गये! गैराज से वह सन्दूक गायब हो गया था!

तीनों सन्दूक के गायब होने के सदमे से उभरने भी न पाये थे कि गेट के ठीक सामने एक कीमती इम्पोर्टेड कार ग्राकर रुकी। एक पतला सा लम्बा ग्रादमी उसमें से उतरा ग्रौर सीधे उन तीनों की ओर ग्राया।

राजू की ग्रोर देखते हुए उसने पूछा, 'शायद तुम्हारा ही नाम राजू है ना बेटे?'

'जी हां, राजू ने उत्तर दिया, 'कहिए क्या काम है?'

'ग्रखबार के समाचार के ग्रनुसार कल नीलामी में तुमने एक पुराना सन्दूक खरीदा। ठीक है? दो रुपये में!'

'जी हां'

'शाबाश', लम्बा व्यक्ति बोला, 'मैं ज्यादा इधर-उधर की बात नहीं करूंगा। मैं तुमसे वह सन्दूक खरीदना चाहता हूं।'

'लेकिन वह सन्दूक···'

'यह देखो उसने हवा में हाथ घुमाया और उसके हाथ में दस-दस के नोट पंखे की शक्ल में पैदा हो गये,' एक सौ रुपये हैं मैं उस सन्दूक के पूरे सौ रुपये दूंगा। बोलो उस पुराने बाबा ग्रादम के युग के सन्दूक के इतने रुपये बहुत ज्यादा नहीं हैं?'

'बात यह है जनाब···'

'देखो इन्कार मत करो! बात यह है वह है नहीं। उस सन्दूक पर 'अलीबाबा दी ग्रेट' लिखा है मुझे इसलिए दिलचस्पी है। अलीबाबा एक समय मेरा दोस्त था। कई वर्षों से वह गायब है। मैं अपने दोस्त का सन्दूक उसकी निशानी के तौर पर खरीदना चाहता हूं। यह रहा मेरा कार्ड।' उसने चुटकी बजाई नोटों वाला हाथ हवा में लहराया ग्रौर नोट एक कार्ड में बदल गये। उसने कार्ड राजू को पकड़ाया। कार्ड पर लिखा था 'प्रकाश रंजन कोका जादू सम्राट' ग्रौर नीचे छपा था।

'ग्राप जादूगर हैं? राजू के मुंह निकला। लम्बे व्यक्ति ने मुस्कारते हुये झु कर स्टेज शैली में ग्रभिवादन किया 'जी ह बदा जादूगर है। है नहीं था। ग्रब मै स्टेज पर शो करना छोड़ दिया है। जादू क कला पर एक पुस्तक लिख रहा हूं।'

उसने हवा में चुटकी बजाई ग्रौर नो दोबारा हाथ में प्रकट हो गये। 'बोलो सौ मंजूर?'

राज हकलाया, 'ज-जनाब यही तो ग्रापको बताने की कोशिश कर रहा हूं। कैसे बेच सकता ······?

जादूगर की भौंहे तन गयीं, 'कैसे न बेच सकते हैं मुझे गुस्सा मत दिलाग्रो ग्रपना चेहरा राजू के चेहरे के निकट ल ग्रौर चमकीली ग्राँखें राजू की ग्रांखों में ड दीं, 'मानलो मैं चुटकी बजाऊं ग्रौर तुम्हें ह में गायब कर दूं? ···शू ऽऽऽऽ! यूं ··· इस तरह! खेल खत्म!'

जादूगर ने धमकी दी महिन्द्र ग्र श्याम के रोंगटे खड़े हो गये। राजू भी स गया, 'जनाब में आपको वह सन्दूक इसि नहीं बेच सकता क्योंकि वह है ही नहीं पास! यहाँ गैराज में रखा था सुबह ह ग्रभी देखते हैं गायब है। पड़ोसी के गैरज भी कई चीजें गायब हो गयी हैं। चोर गये।'

'चोरी हो गयी? तुम सच कह रहे बेटे?'

'जी हां जनाब', राजू ने पूरे दास्त उसे सुनाई।

'यह तो बहुत बुरा हुग्रा। 'जादू कोका बोला, 'ग्रलीबाबा दि ग्रेट का सन्दू इतने सालों बाद प्रगट ग्रौर फिर गायब जाये!'

राजू ने ग्रन्दाजा लगाया, 'शायद स

शेष पृष्ठ ३५ पर

सरदार क्या बात है आजकल तुम हर समय किसी सोच में डूबे नजर आते हो ? किसी जानवर ने तो नहीं काट खाया तुम्हें ?
अब मुझसे अकेले जंगल की सरदारी का बोझ नहीं उठाया जाता । सोच रहा हूँ कि एक डिप्टी सरदार रख लूं । लेकिन समस्या यह है कि इस पद के लिये किसे चुना जाये ?

तुम करोगे ?
लेह, बोलो । हद कर दी सरदार तुमने । बोलो मुझ में क्या खराबी है ? इतने सालों से मैं तुम्हारे साथ गेंडे और भैंसे का शिकार करता आ रहा हूं ।

डिप्टी सरदार बनने के लिये तुरन्त निर्णय लेने की योग्यता चाहिए । तुम बताओ क्या तुम जल्दी फैसला ले सकते हो ?
ले सकता हूँ । लेकिन···नहीं जरा सोच लूं मैं ! अभी सोच कर बताता हूं···।
जल्दी सोच लो ।

अब तो धूप भी ढल गयी । चलो रहने दो । मुझे जवाब मिल गया ।

बुढ़ापे के कारण शायद सरदार सठिया गया है । दिमाग खराब हो गया है । कहता है कि जवाब मिल गया । मैंने तो अभी कुछ बताया ही नहीं । हो ही ही ही ।

फैण्टम — जंगल शहर

लकड़बग्घे डियाना को चारों ओर से घेर लेते हैं।
अब मैं थक गई हूं, बहुत देर तक नहीं लड़ सकती।
© 1979 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.

और ऊपर ये गिद्ध आखिरी घड़ी का इन्तजार कर रहे हैं।
HISSS HISSS
FALK & BARRY 3/14

और फिर
धमाका

धमाका
!

डियाना…

तुम ठीक तो हो और बच्चा… दोनों ठीक हैं।
चलते-फिरते भूत का कोई भी बच्चा लकड़बग्घे से नहीं डर सकता।
ओहो…मुझे चक्कर आ रहा है।
© 1979 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
FALK & BARRY 3/15

मुझे तुमसे मिलकर हमेशा खुशी होती है और इस बार तो पहले से कहीं ज्यादा।
डियाना, एक घंटे पहले तो मुझे पता भी नहीं था कि तुम आ रही हो।
FALK & BARRY 3/16

तुम्हें मेरा तार नहीं मिला…? इन लकड़बग्घों को मैं कभी नहीं भूलूंगी।
© 1979 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.

मैं भी नहीं भूलूंगा… ची ची…डाक बन्दर को चीते ने रोक लिया था मैं तो उसे किस्मत से मिल गया।
किस्मत।

अब मैं बिल्कुल ठीक हूं। उफ? वह लकडबग्घे…
भूख लगी है डियाना? तुम्हारा समय पास आ गया है, तुम यहां क्यों आई?

इसीलिये तो आई कि मेरा समय पास आ गया है।
मतलब?

मतलब यही है कि हमारा बच्चा फैण्टम की खोपड़ी वाली गुफा में होगा। सब फैण्टम के बच्चों जैसा।
ओ…नहीं…

डियाना तुम बच्चे को जन्म गुफा में ही दोगी ?
हां···जरूर, क्या तुम्हें अचम्भा है ?

पर···मैंने तो सोचा था कि तुम्हारी मां चाहती है कि तुम अस्पताल में जाओ।
मां तो नहीं जन्म दे रही, मैं दे रही हूं।

मैंने सोचा था कि तुम खुश होगे, तुम यही चाहते हो न।
मगर मुझे तुम्हारी बहुत फिक्र है। तुम्हें कोई कठिनाई न हो।

मैं सोच रहा हूं तुम अस्पताल में ही ज्यादा सुरक्षित रहोगी।
मगर हजारों सालों तक फैण्टम खोपड़ी की गुफा में ही पैदा हुए हैं, तुम क्यों फिक्र करते हो।

मैंने सोचा था कि तुम चाहते हो कि जन्म खोपड़ी की गुफा में ही हो और तुम सोचते हो कि मैं अस्पताल जाना चाहती हूं।

तुम मेरी फिक्र करते हो इसकी मुझे खुशी है। मगर फिक्र न करो, सब ठीक हो जायेगा।

मैंने यह किताब पढ़ ली है। मैं तैयार हूं।
क्या ये सचमुच आसान है ?
प्राकृतिक जन्म।

हां, हजारों साल तक लोगों ने ऐसा ही किया है। तुम्हारे बीस पूर्वज ऐसे ही पैदा हुए।

मैंने कई बार सोचा है···
हां, फिक्र मत करो, सब ठीक हो जायेगा।

क्या तुम्हें घुड़सवारी करनी चाहिए ?
हां, अगर रास्ता ज्यादा ऊबड़-खाबड़ न हो।

हाय राम ! वो गंदे गिद्ध, हमारे जाने की इन्तजार में, जिससे कि वे तेन्दुए को खा सकें।

जंगल का पुराना नियम, खाओ या खाये जाओ।
हाय···वह मैं हो सकती थी···
HISS HISS
HISS

कीला-वी का सुनहरी तट, हरित कुटिया जहां पर हमारा हनीमून हुआ था। क्या हम दुबारा जा सकते हैं ?
जरूर, बहुत बार डियाना।
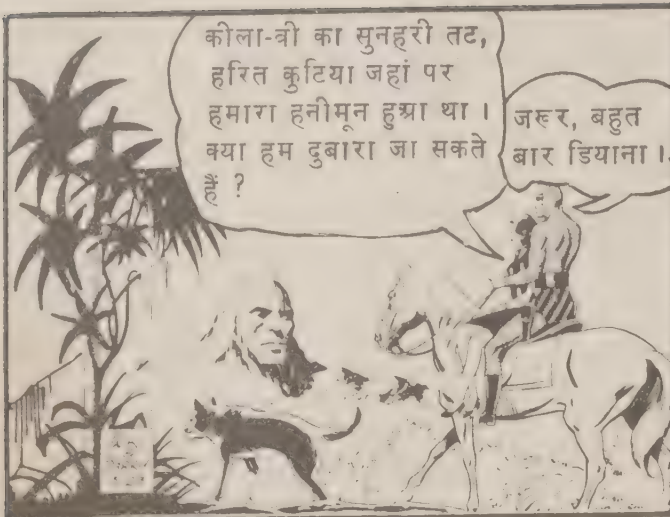
फैण्टम बेबी
फैण्टम बेबी
जंगल में फुसफुसाहट, आवाज को सुनो, ऐसा नहीं लगता क्या…?
हां बिल्कुल।
आगे, एक पुराना दोस्त, व्यापारी जॉय। मुसीबत की ओर जाता हुआ।
मैं इस काम के लिए बहुत बूढ़ा हो गया हूँ।
CLANK
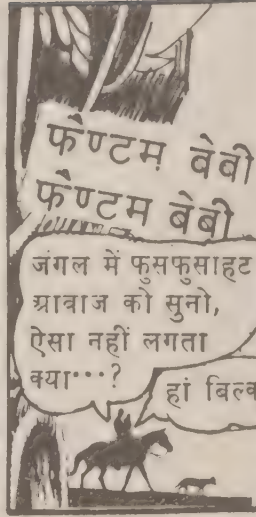
बिल्कुल शांत, विश्वास नहीं होता कि हम जंगल में हैं। शहर से ज्यादा सुरक्षित…
मगर शहर के जैसे…कभी पता नहीं आगे क्या मिलेगा ?

आगे व्यापारी जॉय।
हमारी आखिरी यात्रा इसके बाद अगर उन्हें सामान की जरूरत हो तो वे हमसे आकर लेंगे।

और व्यापारी जॉय से भी आगे।
हमारी किस्मत आज तेज है कोई आ रहा है।
ठन-ठन।

व्यापारी जॉय जंगल की पगडंडी पर।
उसे पकड़ो।
पकड़ लिया

अरे देखो हथियार वाह री किस्मत !
हथियार, खाना सब कुछ है इसके पैसे ढूंढ़ो।

मिल गए पैसे इस थैले में, पता नहीं कौन है ये ?
हमें क्या फिक्र, शेर तेंदुये खा जायेंगे।

तुम्हें पता नहीं, मैंने कितनी बार ये सुन्दर सपना देखा है। जंगल में सवार तुम्हारे, हीरो और डेविल के साथ…
मुझे भी विश्वास नहीं होता तुम यहां हो डियाना।

भौं भौं
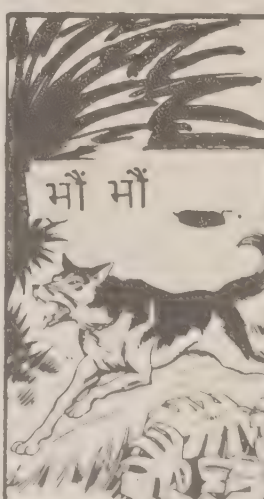
डेविल क्यों भौंक रहा है ?
आगे कुछ है, यहाँ रुको।

क्रमशः

प्र० : बिल्ली के मुँछ क्यों होती है तथा बिल्ली को इससे क्या लाभ है ?

उ० : बिल्ली परिवार में घर की पालतु बिल्ली से लेकर साइबेरिया में पांये जाने वाले २७५ किलो वजन के चीते तक सम्मिलित हैं। इस परिवार के पशु चाहे कहीं रहते हों या इनकी शक्ल सूरत कैसी भी हो एक बात इन सबमें पाई जाती है कि इनका शरीर शिकार करने के लिये अत्यन्त उपयुक्त होता है तथा ये सभी निपुण शिकार करने वाले पशु होते हैं।

बिल्ली की मूंछें बिल्ली को शिकार करने में विशेष सहायता प्रदान करती हैं। बिल्ली जब शिकार करने निकलती है और किसी विशेष कारणवश उसके कान व नाक उसे अपने चारों ओर की जानकारी देने में असमर्थ हों या फिर कहीं और व्यस्त हों तो ऐसे में मूंछ के बालों की सहायता से बिल्ली अपने चारों ओर की जानकारी ग्रहण करती है। उदाहरण के लिये बिल्ली चूहे इत्यादि की खोज में जब किसी अंधेरे छेद में मुंह घुसाती है तब मूंछ के बाल ही उसे छेद के किनारों का आभास कराते हैं तथा चूहे इत्यादि के शरीर से छू जाने पर तुरन्त बिल्ली को शिकार की सूचना देते हैं। इस प्रकार जब बिल्ली की सूंघने और देखने की शक्ति से उसे सहायता प्राप्त नहीं हो पाती तब भी बिल्ली मूछों के अपने लम्बे बालों से अपने आसपास की जानकारी प्राप्त कर लेती हैं।

बिल्लियों के परिवार को देखने तथा सूंघने की शक्ति अत्यन्त विकसित होती है। इनकी आंखें तेज होती हैं और मनुष्य के समान ही सीधा देख सकती हैं। इस कारण बिल्ली दोनों आंखों को एक वस्तु पर केन्द्रित कर उसकी दूरी का अनुमान ठीक-ठीक लगा लेती है। बिल्ली अपनी आंखों से अन्धेरे में भी अच्छी तरह देख लेती है। दिन के प्रकाश में बिल्ली की आंखें सिकुड़ कर छोटी हो जाती हैं, परन्तु रात में ये फैल कर प्रकाश के हर कण को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। इनकी आँखों के पीछे एक ऐसा तत्व होता है जो प्रकाश को परावर्तित कर देता है और बिल्ली इसकी सहायता से बखूबी देख लेती हैं।

प्र० : संसार में नाप की इकाइयों का विकास कैसे हुआ ?

उ० : संसार में नाप की इकाइयों का विकास होने से पहले मनुष्य चीजों को एक दूसरी परिचित वस्तु से तुलना कर नापता था तथा तुलना करने के लिए सबसे अधिक परिचित मनुष्य का अपना शरीर ही था। उदाहरण के लिये अपने घर से अपने मित्र के घर तक की दूरी नापना चाहता था तो इस दूरी में अपने कदम गिन कर इसे नाप लेता था और इस दूरी के नाप को इतने कदम लम्बा कहकर इस दूरी का अनुमान लगा लेता था। इसी प्रकार एक कमरे की लम्बाई नापने के लिए एक पैर को दूसरे के आगे रखकर लम्बाई इतने 'पैर' या 'फीट' कही जाती थी।

कपड़े जैसी वस्तुओं को नापने के लिए मनुष्य ने सदा से ही बाँहें, हाथ, तथा ऊंगलियों का प्रयोग किया है। बाँह फैला कर उंगलियों के सिरे से नाक तक, हाथ फैला कर अंगूठे के सिरे से कनकी उंगली के सिरे तक तथा अंगूठे के लम्बाई नापने की इका. ईयों के रूप में प्रयोग किये जाते थे।। परन्तु इन नाप के तरीकों में विशेष कठिनाई थी कि ये नाप हर व्यक्ति के अपने ही होते थे क्योंकि एक व्यक्ति के पैर या हाथ दूसरे से बड़े या छोटे होते थे। इस कारण नाप की मानदण्ड इकाइयां बनाने की आवश्यकता महसूस हुई। मध्यकाल में व्यापारी संघ नापने की इकाइयों के मानदण्ड का ध्यान रखते थे। बाद में हर देश की सरकार ने अपनी हर प्रकार की मानक इकाईयां स्थापित कर, अपने-अपने देश में लागू कीं।

आजकल मानक इकाईयों की अन्तर्राष्ट्रिय मान्यतायें हैं। भिन्न भिन्न देशों ने एक ही प्रकार की नाप की इकाईयों के प्रयोग का समझौता कर रक्खा है। कई देशों में मानदण्ड रखने का भार विशेष कार्यालयों पर होता है।

नापने की दशमलव प्रणाली की खोज सन १७९१ में हुई। इसके उपरान्त बहुत से देशों ने इसे अपना कर इसका प्रयोग आरम्भ किया। भारत में भी नाप की यही दशमलव प्रणाली लागू है। परन्तु अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलेंड तथा बरतानियां अभी इस प्रणाली को अपनाने के प्रयास में हैं।

प्र० : संसार में सबसे पहला कार्टून किसने और कब बनाया था ?

उ० : आजकल संसार के लगभग सभी समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं में किसी न किसी प्रकार के कार्टून अवश्य ही छापे जाते हैं। कुछ को देखकर हमें हँसी आती है तो कुछ अन्य कुछ दैनिक घटनाओं पर व्यंगात्मक टिप्पणी प्रदान करते हैं। इस आधुनिक कार्टून कला के जन्म दाता एक इंगलिश आर्टिस्ट श्री विलियम होगर्थ थे इनका जीवन-काल सन १६९७—१७६४ तक था। इनसे पहले भी कुछ लोगों ने अजीब रीतिरिवाजों तथा अनोखे व्यवहार के व्यंग चित्र बनाये थे। परन्तु वास्तविक कार्टून कला का आरंभ श्री होगर्थ ने ही किया था।

श्री होगर्थ लोगों के व्यवहार मानव प्रकृति तथा उनके झुकाव इत्यादि में रुचि रखते थे इसके अतिरिक्त वो अपने चित्रों में सार्वजनिक समस्याओं पर भी व्यंग करते थे, जैसे नशा करने वालों के व्यवहार, बिगड़े बालकों के व्यवहार, हर प्रकार के अपराध इत्यादि। होगर्थ ने ही चुनाव के भी कार्टून बनाने आरम्भ किये थे। इनका ये कार्य एक अन्य इंगलिश श्री थोमस रोलन्डसन द्वारा आगे बढ़ाया गया। इनके कार्टून बड़ी संख्या में छाप कर सारे इंगलेंड में भेजे जाते थे वो मनुष्य के नाक नक्शों को बड़ा करके उनके कार्टून बनाते थे, ऐसे कार्टूनों को केरीकेचर कहते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ काल में ही युरूप के रिसालों ने, जो कि आधुनिक पत्रिकाओं से बहुत मिलते जुलते थे, दैनिक घटनाओं पर व्यंगात्मक कार्टून छापने आरंभ कर दिये थे यहीं से राजनीतिक कार्टूनों का आरम्भ हुआ। सन् १८०८-१८७९ के काल में बहुत ही प्रसिद्ध राजनीतिक कार्टून बनाने वाले थे फ्रेंच श्री होनोर डुमरे। इन्होंने सरकार में भ्रष्टाचार तथा अफसरों के दुर्व्यवहार इत्यादि के बहुत ही कटु व्यंग कार्टून बनाये।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल

और घुमर रैट चूंबिकोला

दो दिन हो गये । गरीब चन्द घर नहीं ग्राया । पता नहीं कहाँ होगा ? क्या किसी चुहिया के साथ भाग गया या किसी बिल्ली के पेट में बैठा राम नाम का जप कर रहा है ?

ऐसा तो कभी नहीं हुग्रा, वह दो घंटे से ज्यादा कभी हमसे अलग नहीं रहा । जालिम ने यह भी नहीं सोचा कि उसके गम में हमारा यहां क्या होगा । हम रेत पर पड़ी मछली की तरियों तड़फ रहे हैं ।

उसके बिछोह का गम हमारा दिल ही जानता है याड़ी । जब से वह गया है हमने रोटी नहीं खाई । बस पुलाव, बिरयानी, चिकन चोमीन, नॉन और परांठे ही खा रहे हैं । ऐसे कब तक चलेगा ! हमने पानी भी नहीं पिया । बियर ग्रौर ड्राई जिन नीट पीकर दिन काट रहे हैं । सीता जी के गम में रामचन्द्र जी भी ऐसे क्या तड़फे होंगे ? वह चाय ग्रौर सैंडविच तो खा ही लेते रहे होंगे ।

बात मुश्किल की यह है कि हम पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं लिखा सकते।हम चूहे के गुम होने की रिपोर्ट लिखायेंगे तो पुलिस वाले हंसेंगे । ग्रब हमारे सामने कोई चारा नहीं है । जो कुछ चारा पड़ा था वह ग्रक्ल बड़ी या भेंस वाली भेंस खा गई । ग्रब तो विविध भारती को गम के गानों की फरमाइश के सिवा ग्रौर कोई रास्ता नहीं ।
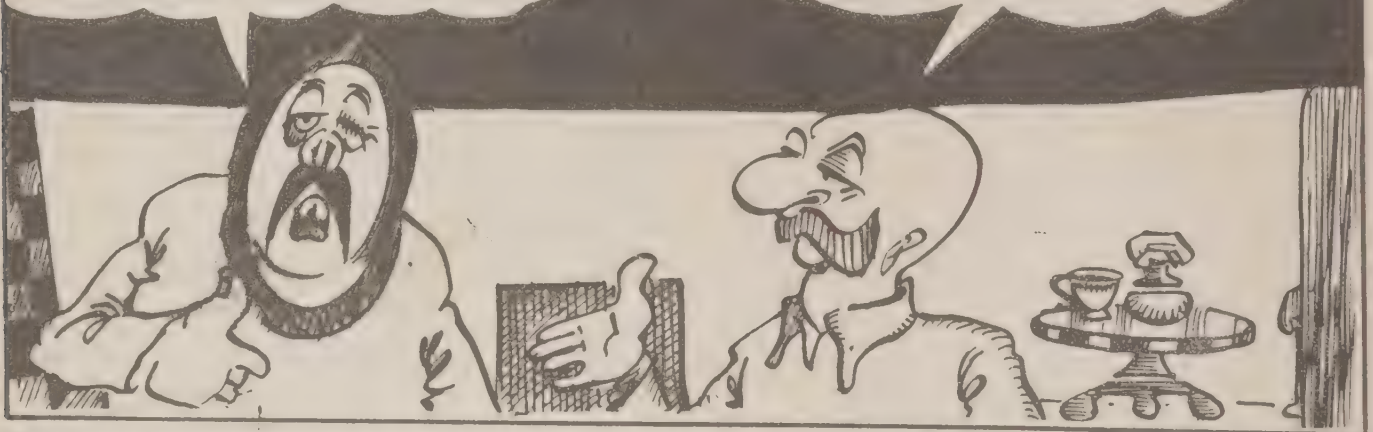
ग्राज की डाक में पता ग्राया है गरीब चन्द का। गरीब चन्द का ग्रपहरण किया गया है। लिखा है, 'प्यारे जासूसो, तुम्हारा दुमछल्ला चूहा मेरे कब्जे में है। उसे छुड़ाना है तो दस लाख रुपये हमारे हवाले करो।ग्रगर पैसे नहीं हैं तो मुझसे द्वन्द युद्ध कर उसे छुड़ा कर ले जाग्रो।मेरा पता यह है, लिखने वाला है 'चूंच चिकोला' दि सुपर रैंट।
सुपर रैंट !

ग्रपहरण करने वाला भी चूहा है ग्रौर हमें लड़ने को ललकार रहा है ?
PANGOLIN

ग्रगर उस चूंच चिकोला के बच्चे की लुगदी बना कर समोसा न बना दिया तो मेरा नाम सिलविल से बदल कर झिलमिल रख देना।पहले में उसे इस घन से चपटा करके बीकानेरी पापड़ बनाऊँगा ग्रौर पत्थर पर डालकर सुखाऊँगा। सूखने के बाद उसके दोनों तरफ ग्रदरक और लहसुन की चटनी बनाकर लेप करूँगा। गर्म मसाला भी डालना पड़ेगा।
फिर हम इस बिल्ली को खिला देंगे। मै इस बिल्ली को खास तौर पर चूंच चिकोला कटलेट खिलाने का निमंत्रण देकर लाया हूं।
MEAOO!
मसाला जादा न डालना।
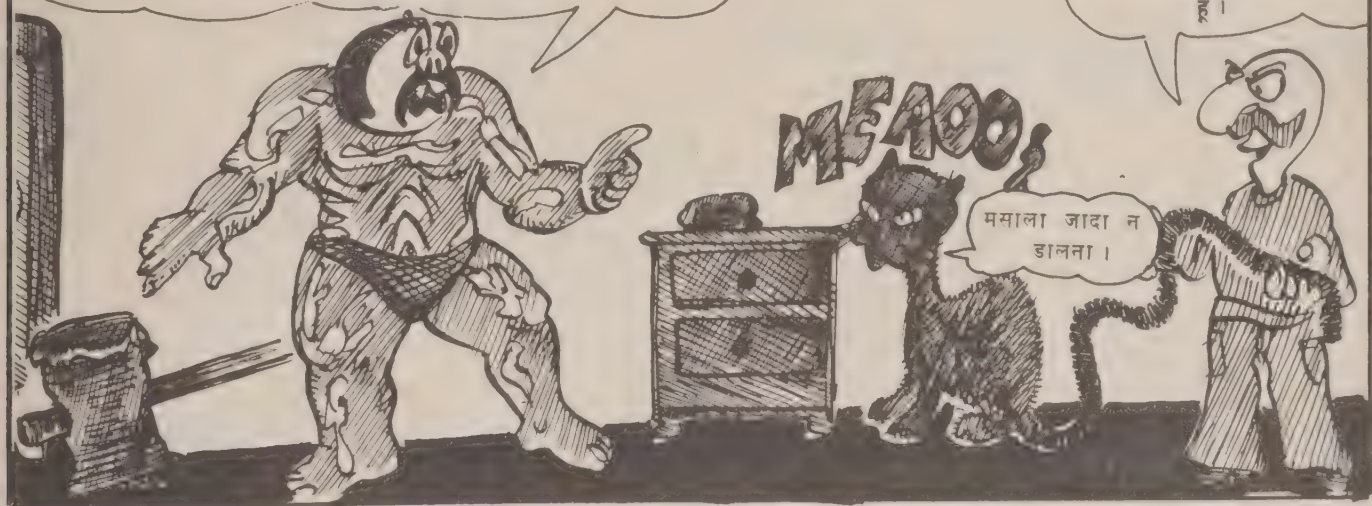
ऐडरेस तो यहीं का दिया है उसने लेकिन नजर नहीं ग्राता कहीं। कहीं यह मजाक तो नहीं था ?
ओये चूंच चिकोला दे पुतरा। बड़ी लम्बी-चौड़ी शेखी मारता था, इब हम ग्रा गिया तो जनानी की तरह ग्रपने घर में लको के बैठ गया। ओये फिट्टे मुंह हो थारा। ग्रपनी माता का दूध पिया हो तो सामने ग्राके गल कर।

ग्रोये पिस्सू, तू ही है चूंच चिकोला ?
नहीं मैं तो चूच चिकोला का चमचा हूँ।
बता कहां है चूंच चिकोला ?
चूंच चिकोला साहब पत्थर के पीछे वाले पेड़ के पास खड़ा ग्रापका वेट कर रहा है।

इधर जाओ गल कर लो । मेरा नाम है चूंच चिकोला । बोलो क्या काम है? अच्छा तो तुम ही हो वे दो फोजी जो रामगढ़ से आये हैं ।
नहीं जी हम रामगढ़ से नहीं आये, हम तो शाहदरे से आये हैं ।
ओ कहीं से भी आओ मुझे क्या फर्क पड़ता है ।
मैने कौन सा तुम्हें टी. ए. बिल देना है तुम पैसे लाये हो या लड़ने आये हो ?
प प पैसे ? पैसे तो नहीं लाये जी हम !
तो लड़ने आये हो ।
BAH

भाई जी बड़े मौके पर एक बात याद आ गयी । तुम्हें पता है कि मैं मंगलवार को किसी पर हाथ नहीं उठाता हूं । आज मंगलवार है इसलिए मैं किस तरह इससे लड़ूं ? मजबूर हूं । अपनी प्रतिज्ञा कैसे तोड़ दूं। इब तो थमको लड़ना पड़ेगा । सोमवार या बुधवार होता तो मै इसे दिखा देता ।
अच्छा ।

बेवकूफ ! आज बुधवार तो है । मंगलवार तो कल था । याद नहीं है हम ठेके पर गये थे और वहां ड्राई डे लिखा था । अब तो तुझे ही लड़ना होगा । तू हिम्मत मत हार । तू आदमी है यह जानवर है । तेरे पास दिमाग है, असली लड़ाई दिमाग से लड़ी जाती है।आदमी तो शेर-हाथी को भी वस में करता है ।
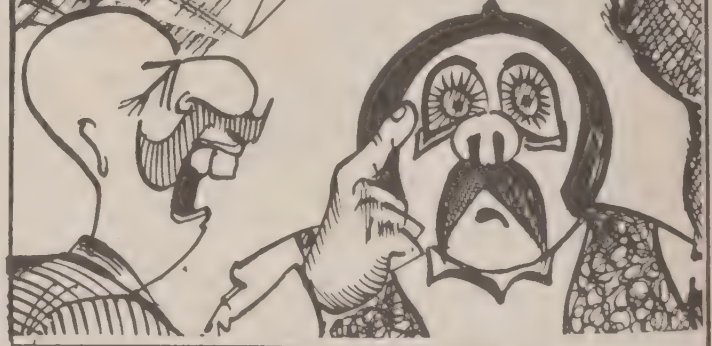
चूहे, मरने के लिए तैयार हो जा । तेरा शरीर सरकारी सांड को तरह है तो क्या हुआ मेरे पास दिमाग है । आदमी दिमाग से बड़े-बड़े पहाड़ उड़ा देता है । तेरी तो बिसात ही क्या है । मै तुझे वह सबक सिखाऊँगा कि अगले जन्म में भी तू उसी का रट्टा लगाता रहेगा । मुहम्मद अली जब दिल्ली में आया था तो मैंने उससे हाथ मिलाया था । तू मिला सकता है उससे हाथ ?
हियर । हियर ! ! वैल सैड सर तालियां तालियां तालियां ।
तू बकवास ही करता रहेगा या आकर लड़ेगा भी ।
GWNNWN

यह कहानो है दिये की श्रौर तूफान की, यह कहानी है दिये की श्रौर नूफान की, इक रात अँधियारी थी, चारों दिशायें काली, तूफान मचल रहा, सिलबिल ने हिम्मत न हारी, लगा दी जान की बाजी, उसने तूफान पर हमला किया, यह कहानी है दिये की श्रौर तूफान की, यह कहानी है दिये की श्रौर तूफान की।
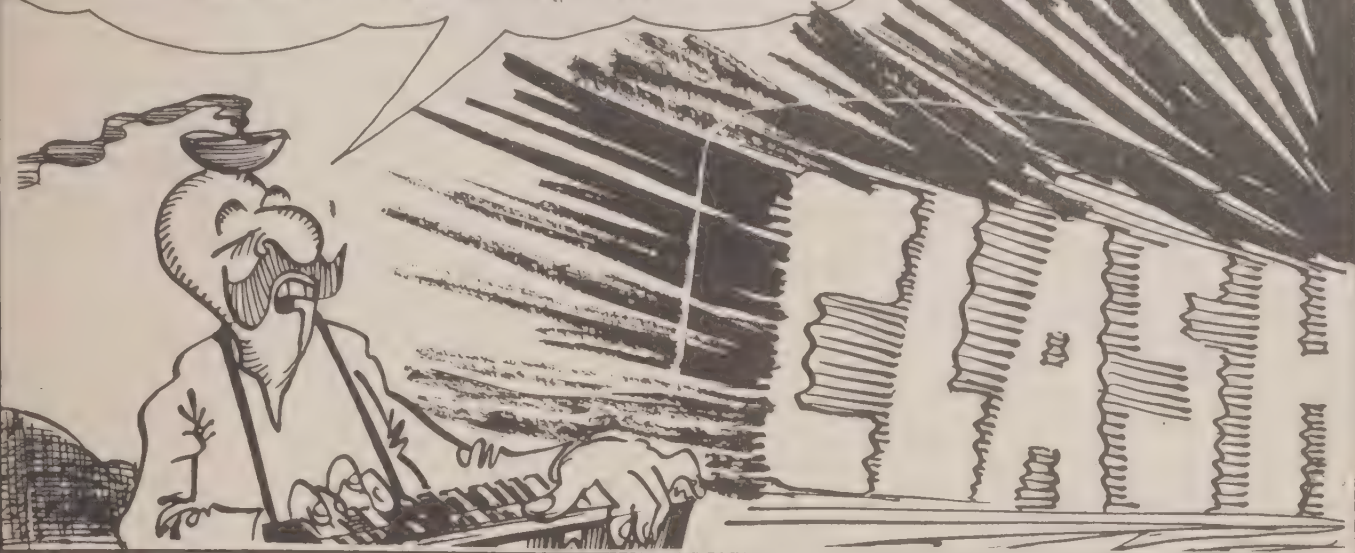
शाबाश याड़ी, तू हिम्मत मत हार। मैं तेरे पीछे खड़ा हूं तेरा भाई। इसकी बायीं कनपटी पर दायें हाथ से हुक मार। जैसे ही यह कनपटी पर हाथ रखे तू बिजली की तेजी से इसकी नाक पर घूंसा मार···पीछे मत हट।

श्राखिरी जीत तेरी होगी। यह राम श्रौर गवण का युद्ध है। मैं तेरी जीत की खुशी मनाने के लिए यही बडबाजा ले श्राऊँगा, बस तू थोड़ी सी श्रौर हिम्मत दिखा। मेरे यार, मेरे छोटे भाई मैं तुझे यहां से कँधे पर बिठा कर ले जाऊँगा श्रपने कँधे···।
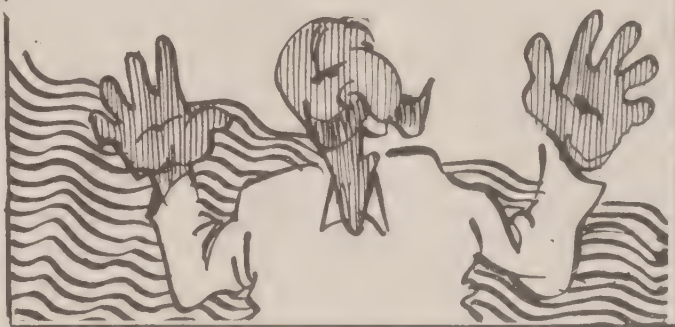
यह ले मैं ही इसे तेरे कंधे पर डाल देता हूँ, तुझे उठा कर कंधे पर रखने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। अब तुझ बैंड बाजे का खर्चा भी नहीं करना पड़ेगा। मैंने पहले ही इसके बाजे बजा दिये हैं। इस सप्ताह के हमारे मैच का फर्स्ट लैग यहीं खत्म होता है सैकेंड श्रौर फाइनल लैग श्रगले सप्ताह होगा। इस बार दर्शकों ने केवल फाईटिंग की कमेंट्री ही सुनी। श्रगली बार हम दीवाना के टी॰ वी॰ पर ब्लो बाई ब्लो का लाइव टेलेकास्ट दिखायेंगे। इस मैच के एक्सपर्ट कमेंटस लाला श्रमरनाथ देंगे।
हमारा श्राज का प्रोग्राम यहीं खत्म होता है श्रगले सप्ताह हम फिर हाजिर होंगे।
PLOP!

आस्ट्रेलिया-पाक

क्रिकेट टैस्ट शृंखला १९८०

भारत से २-० से पराजित होकर लौटने पर पाकिस्तान ने जावेद मियांदाद के नेतृत्व में तीन टैस्टों की शृंखला को १-० से जीत कर अपनी खोई साख फिर से काफी कुछ प्राप्त कर ली। इस शृंखला के आंकड़े—

औसत टैस्ट

पाकिस्तान

बैटिंग

	टैस्ट	इनिंग्स	आउट नहीं	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्द्ध शतक	कैच	स्टम्प	औसत
माजीद खां	३	२	१	१९९	११०	१	१	५	—	१९९.००
तसलीम आरिफ	३	४	१	३०७	२१०	१	१	४	२	१०२.३३
जावेद मियांदाद	३	४	१	१८१	१०६	१	—	१	१	६०.३३
अजमत राना	१	१	—	४९	४९	—	—	—	—	४९.००
मुदस्सर नजर	३	२	—	८८	५९	—	१	२	—	४४.००
वसीम राजा	३	३	१	६७	५५	—	१	२	—	३३.५०
इमरान खान	२	२	—	६५	५६	—	१	—	—	३२.५०
जहीर अब्बास	२	३	१	४५	१९	—	—	—	-	२२.५०
इकबाल कासिम	३	२	१	१९	१४	—	—	१	—	१९.००
अज़ार खान	१	१	—	१४	१४	—	—	—	—	१४.००
हारून रशीद	२	३	—	३७	२१	—	—	१	—	१२.३३
सरफराज नवाज	३	२	—	२२	१७	—	—	१	—	११.००
तौसिफ अहमद	३	१	—	०	०	—	—	—	—	—
ऐहताशुमुद्दीन	१	—	—	—	—	—	—	१	—	—

शतक—तसलीम आरिफ ने २१० रन बनाये आउट नहीं और जावेद मियांदाद ने १०६ रन आउट नहीं (दोनों फैसलाबाद में) माजीद खां ११०, आउट नहीं, (लाहौर में)।

विकेट की साझेदारी में शतक—तसलीम आरिफ और जावेद मियांदाद ने फैसलाबाद में तीसरे विकेट की साझेदारी में बिना किसी रुकावट के २२३ रन बनाये। माजीद खां और इमरान खान ने लाहौर में आठवें विकेट की साझेदारी में १११ रन बनाये।

बॉलिंग

	गेंदें	मेडिन	रन	विकेट	अच्छी गेंदें	१ इनिंग में ५ विकेट	१ मैच में १० विकेट	औसत
इमरान खान	३३६	१४	१४४	६	२-२८	—	—	२४.००
तसलीम आरिफ	३०	—	२८	१	१-२८	—	—	२८.००
इकबाल कासिम	१२१२	६२	४७४	१६	७-४८	१	१	२९.६२
तौसिफ अहमद	८६६	२८	३५७	१२	४-६४	—	—	२९.७५
वसीम राजा	३५४	१०	१९७	४	३-१००	—	—	४९.२५
ऐहताशुमुद्दीन	१०८	२	५९	१	१-५९	—	—	५९.००
सरफराज नवाज	६६६	३०	२५५	२	२-११९	—	—	१२७.५०
अज़ार खान	१८	१	२	१	१-१	—	—	२.००
जावेद मियांदाद	५४	—	३५	०	—	—	—	—
माजीद खां	२१६	६	१०५	०	—	—	—	—
मुदस्सर नजर	७२	१	४६	०	—	—	—	—

१ इंनिग में ५ विकेट्स—करांची में इकबाल कासिम ने ४८ रन देकर ७ विकेटें लीं।
१ मैच में १० विकेट्स—करांची में इकबाल कासिम ने ११७ रन देकर ११ विकेटें लीं।

चंद्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार :

प्र० : आपकी राय में भारतीय बौलर चन्द्र शेखर अब टीम में रखने योग्य हैं या नहीं ?

उ० : नहीं। अब उनमें वह पहले वाला पैनापन नहीं रहा। प्रमाण के लिए इस वर्ष का रणजी सेमी फाइनल मैच लीजिए। चन्द्र शेखर के होते हुए भी कर्नाटक की टीम हरयाणा को नहीं हरा सकी। खैर अब तो चन्द्र शेखर प्रथम श्रेणी मैचों से सन्यास ही ले चुके हैं।

अब्दुल रहीम खीची—कलकत्ता :

प्र० : विश्वनाथ, सुनील गावस्कर, वेंगसरकर, चेतन चौहान, कपिल देव को बैटिंग में क्रम दे ?'

उ० : सुनील गावस्कर, विश्वनाथ, चेतन चौहान, वेंगसरकर, कपिल देव।

लाल मोहन प्रसाद—रोहतास (बिहार) :

प्र० : क्रिकेट टेस्ट में मेडिन क्या होता है और पिच को कितनी दूरी पर गाड़ा जाता है ? कितने रन पर एक शतक होता है ?

उ० : जिस ओवर में कोई रन नहीं बन पाता वह मेडिन ओवर कहलाता है। स्टम्पस के बीच २२ गज का अन्तर होता है और सौ रनों का एक शतक।

बिजय बिसानी—बीकानेर :

प्र० : टैस्ट क्रिकेट में सबसे धीमा शतक किसने व कितने समय में बनाया है ?

उ० : पाकिस्तान के मुदस्सर नजर ने ५५५ मिनट में शतक बनाया।

प्रदीप कुमार तिवारी—पुलगांव :

प्र० : क्रिकेट में यदि कोई खिलाड़ी बॉल को मारने के पश्चात दौड़ना (रन के लिए) शुरु कर दे, तथा जब वह दूसरे छोर पर पहुँचे, इसी बीच अगर वह कैच आऊट हो गया तो क्या रन पूरा हो जाता है, यदि नहीं तो क्या न्यू कोरनोर को नौन स्ट्राइकिंग एण्ड पर जाना पड़ता है ?

उ० : रन नहीं माना जायेगा। नया बल्लेबाज स्ट्राइकिंग स्टेंड पर ही आयेगा।

दीपक मदन—हरियाणा :

प्र० : मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि वालीबॉल का मैदान कितना लम्बा तथा कितना चौड़ा होता है ? तथा नेट कितना ऊँचा बांधते है ?

उ० : १८ मीटर लम्बा तथा नौ मीटर चौड़ा और नेट की ऊँचाई पुरुषों के लिए २.४३ मीटर (७ फुट ११.५/८ इंच) व महिलाओं के लिये २.२ मीटर (७ फुट ४. १/८ इंच) होती है।

आस्ट्रेलिया

बैटिंग

	टेस्ट	इनिंग्स	आउट नहीं	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्ध शतक	कैच	स्टंप	औसत
ए. आर. बोर्डर	३	५	२	३९४	१५२	२	१	४	—	१३१.३३
जी. एम. चैपल	३	५	—	३८१	२३५	१	२	३	—	७६.२०
जी. एन. यलप	३	५	—	२३७	१७२	१	—	१	—	४७.४०
के. जे. ह्यूज	३	५	—	१८२	८८	—	२	—	—	३६.४०
जे. एम. वीनर	२	३	—	१०२	९३	—	१	—	—	३४.००
जी. आर. बीअर्ड	३	५	—	११४	४९	—	—	१	—	२२.८०
बी. एम. लेर्ड	३	५	—	१०९	६३	—	१	—	—	२१.८०
आर. डब्ल्यू. मार्श	३	५	—	१०६	७१	—	१	४	१	२१.२०
आर. जे. ब्राइट	३	५	२	५६	२६	—	—	—	—	१८.६६
डी. के. लिली	३	४	२	१८	१२	—	—	१	—	९.००
जी. डीमॉक	३	३	१	३	३	—	—	—	—	१.५०
डी. डब्ल्यू. हूकम	१	२	—	०	०	—	—	—	—	—

शतक—ग्रेग चैपल ने २३५ रन और ग्रेहाम यलप ने १७२ रन बनाये (दोनों ने फैसलाबाद में शतक बनाये।) ऐलेन बोर्डर ने १५० रन (आउट नहीं) और १५२ रन लाहौर की प्रत्येक इनिंग्स में बनाये।

विकेट की साझेदारी में शतक—१७९ (तीसरा विकेट) ह्यूज-चैपल, २१७ (चौथा विकेट) चैपल-यलप, १२७ (छटा विकेट) यलप-मार्श, सब फैसलाबाद में। १०६ (आठवां विकेट) बोर्डर-ब्राइट लाहौर में प्रथम पारी में। १०८ (तीसरा विकेट) लेर्ड-चैपल और १३६ (सातवां विकेट) बोर्डर-बीअर्ड लाहौर में द्वितीय पारी में।

बॉलिंग

	गेंदें	मेडिन	रन	विकेट	अच्छी गेंदें	१ इनिंग में ५ विकेट	१ मैच में १० विकेट	औसत
ब्राइट	८८१	४३	३५४	१५	७-८७	१	१	२३.६०
चैपल	२०४	९	७४	३	३-४९	—	—	२४.६६
लिली	६४२	१८	३०८	३	३-११४	—	—	१०१.००
बीअर्ड	२६५	१७	११०	१	१-२६	—	—	११०.००
डीमॉक	३०६	१३	१२८	१	२-४८	—	—	१२८.००
बोर्डर	१८	२	३	०	—	—	—	—
ह्यूज	४८	१	१९	०	—	—	—	—
लेर्ड	१२	१	३	०	—	—	—	—
मार्श	६०	१	५१	०	—	—	—	—
वीनर	३०	१	१९	०	—	—	—	—
यलप	३०	—	२९	०	—	—	—	—

१ इनिंग में ५ विकेट्स—कराची में रे ब्राइट ने ८७ रन देकर ७ विकेटें लीं।

१ मैच में १० विकेट्स—कराची में ब्राइट ने १११ रन देकर १० विकेटें लीं।

हा हा हा

● भारत पाकिस्तान की लड़ाई चल रही थी। एक नया सैनिक जो हाल में ही मोर्चे पर आया था अपने कमांडर से मिलने गया और बोला, "साहब मुझे छुट्टी चाहिए मेरी हाल में ही शादी हुई है।" कमांडर गरजा, "तुम्हें मोर्चे पर आए दस दिन हुए और अभी छुट्टी मांग रहे हो?" फिर टालने की गरज से कमांडर बोला, "चलो तुम्हें छुट्टी दे देंगे अगर तुम एक पाकिस्तानी टैंक को छीन कर ले आओ तो।"

सैनिक गया और एक घंटे बाद एक पाकिस्तानी टैंक लेकर लौटा। कमांडर चकित रह गया। चीख कर बोला, "यह मैं क्या देख रहा हूँ? यह कैसे सम्भव है? क्या किया तुमने?"

सैनिक बोला, "मैं पाकिस्तानी सिपाहियों के पास गया और पता किया किसकी हाल में शादी हुई है। बस उसे अपना टैंक दे दिया और उसका मैं ले आया।" ●

दीवाना

वर्ग पहेली

15 रुपये पुरस्कार जीतिये
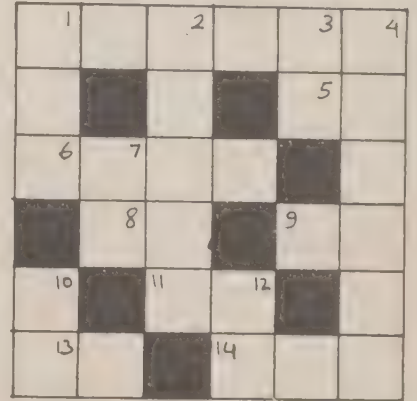
संकेत बायें से दायें

१. महक न मरा तो विश्वासघात हो सकता है! (५)
५. बरसात का सच्चा निचोड़ (२)
६. पाताल पड़ा से आप बनस्पति ढूंढ निकालिये। (२-२)
८. कोल्हू पेर कर परी निकाली जा सकती है? (२)
९. चाची और बीबी चाहें तो ताला खुलेगा। २
११. सूखी रहम करके मुंह मीठा कर। (२)
१३. देहली व मिचीगन में मिलने वाला फल। (२)
१४. इसे न रखकर ही पूरा हो सकता है। (३)

ऊपर से नीचे

१. डान के गाने में जोर की आवाज करने वाला साज। (३)
२. खीला पाकर गड़मड़ हो जाये तो आर्ट की समझ वाला मिलेगा। (५)
३. प्रतिकूल होने पर यह नहीं आता। (२)
४. बीसमल या तबस्सुम का सिर मिल कर ऐसा शख्स बना सकते हैं जो आपके प्रति वफादार नहीं होगा। अपनी गर्ज ही पूरी करेगा (४-२)
७. यह प्रकार कर बदला लेने के लिये कहता है? (२)
१०. नंदा और लीनाका खोखला पन। (२)
१२. बेसिर सरक। (२)

अन्तिम तिथि १२ जुलाई ८०

अब तक—बिल्लू मॉडल स्कूल के साथ वाले मैदान में अपने फुटबाल प्रेमी सहपाठियों के साथ फुटबाल खेलने गया। लेकिन साथियों ने उसे नहीं खिलाया क्योंकि वह किक ठीक तरह नहीं लगा पाता था। एक दिन घर में सफाई करते हुये उसे बरसाती में, बहुत पुराने खिलाड़ी सीधा गोल के फुटबाल शूज मिल गये उन्हें पहन उसने पहली बार निशाने पर सीधी किक मारी।
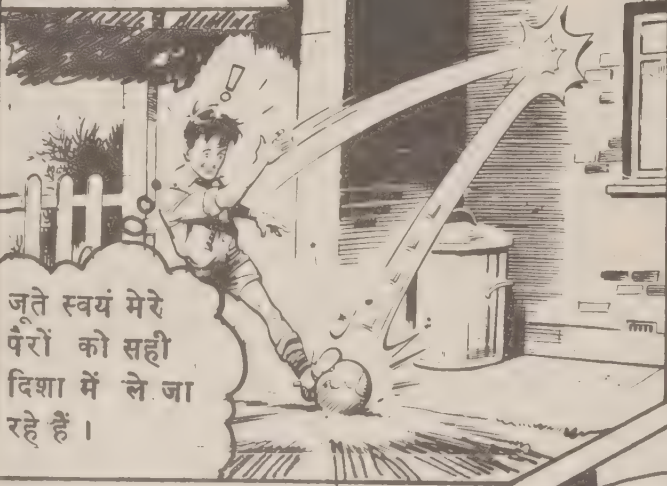
मैं भी खेलूं ?
तुझे हमने पहले ही कह दिया कि जाकर बच्चों के साथ कंच्चे खेल
?
जरा इसके जूते तो देखो !
बाबा आदम के जमाने के लगते हैं ।
बड़ा खेलने चला है । इनको पहनकर दौड़ भी नहीं पायेगा ।
बिल्लु उदास हो लौट रहा था कि ···
बिल्लू, हमारी टीम में एक खिलाड़ी की कमी हो गयी है ! तू खेलेगा ।
तूने खेलना तो क्या है बस हमें गिनती पूरी करनी है ! ले यह शर्ट पहन ले ! विग में खड़ा हो जा ।
ठीक है ।
कुछ क्षणों बाद ।
यह देख यार वह रहा बिल्लू ! सीनियर क्लब टीम में खेल रहा है ।
जरा देखें वह कैसे अपना तमाशा बनाता है ।
ठीक उसी समय क्लब टीम को कार्नर किक मिला !
बिल्लू तू पैनल्टी एरिया में जा कहीं खड़ा हो जा ।
अच्छा ।
लेकिन······
मैं इस तरफ नहीं जाना चाहता लेकिन मेरे पैर मुझे इधर खींचते जा रहे हैं । क्या माजरा है ।
फिर······
हैं ! गेंद सीधी मेरी तरफ आ रही है । शायद इसी लिये जूते मुझे ठीक इस जगह ले आये

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सुभाष मनोहर दण्डवते—जबलपुर : चाचाजी आपकी बढ़ती हुई गुंडागर्दी को किस प्रकार रोका जा सकता है ?

उ० : सुनते आये हैं कि कांटा कांटे से निकाला जाता है।

विनोद पुरी, 'रंजू'—लुधियाना : छोटी सी बात उम्र भर का पछतावा कब बन जाती है ?

उ० : जब यह ज्ञात होता है कि बात के मुकाबले में उम्र बहुत छोटी है

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, दीवानगी की सीमा कहां तक होती है ?

उ० : मण्डला से लेकर बहादुरशाह जफर मार्ग, दिल्ली तक।

रेणु पटेल—खंडवा : चाचाजी, घमंडी आदमी आपे से बाहर क्यों हो जाता है ?

उ० : क्योंकि वह आदमी नही रहता। ऐसे आदमी के लिये गालिब ने कहा है, उसे आदमी मत समझो :

जिसे ऐश में यादे खुदा ना रही,
जिसे तैश में खौफे खुदा ना रहा।

संजय कुमार गर्ग—यसौधा, फैजाबाद : मैंने एक प्रश्न भेजा था आपने उसका उत्तर नहीं दिया। अगर आप अच्छी सूरत देख कर ही प्रश्नों के उत्तर देते हैं तो मैं अपनी फोटो भेज दूं ?

उ० : इस पत्र में भी आपने प्रश्न कोई नहीं किया है। हम उत्तर किसका दें। आप अपनी अच्छी सूरत की फोटो भेजना चाहते हैं तो यह शेर याद रखिये :

अच्छी सूरत भी क्या बुरी शै है।
जिसने डाली बुरी नजर डाली।

रविन्द्र नाथ पंजाबी—जालन्धर शहर : चाचाजी, आप इस समय देश की हालत को किस दृष्टिकोण से देखते हैं ?

उ० : जिसमें दृष्टि न हो, कोण चाहे कोई सा भी हो। दृष्टि हो तो देश की हालत भयंकर दिखाई देती है।

विजय शकंर सिन्हा—डिहरी-आन सोन, रोहतास : अंकल जी, 'प्यार' शब्द को सुनकर अधिकतर लोग स्त्री पुरुष के प्यार की बात क्यों समझ लेते हैं ?

उ० : क्योंकि वे अपनी समझ के दायरे में कूयें के मेंढक हैं : एक अर्थ के अतिरिक्त उनका ध्यान किसी दूसरी ओर जाता ही नहीं : जैसे किसी भूखे से पूछो, 'दो और दो ?' तो जवाब देगा, चार रोटियां'।

मोहम्मद जहांगीर—रांची : चाचा जी, दुनिया में हर आदमी आप की तरह बुद्धिमान हो जाये तो ?

उ० : हर आदमी बुद्धू मान लिया जाये।

एम० एस० गुजराल—माडल टाऊन : बेबस इन्सान इस दुनिया में किस तरह जीते हैं ?

उ० : एक बस निकल जाये, तो दूसरी बस पकड़ कर :

मोहलाल शर्मा—करनाल : क्या आप के कलम से निकला हर उत्तर ठीक होता है ?

उ० : ठीक तो चाहे न होता हो, पर आप बताइये कि हर उत्तर में ऐसी दीवानगी होती है या नहीं कि पढ़ कर दीवार में सर देकर मारने को जी चाहे ? (अपना सर)

अशोक जौहर गगन—देहरादून : जब तक जनता पार्टी सत्ता में रही, आप और आप

की बिरादरी वाले उसका बेड़ा गर्क करने में लगे रहे। अब आप की बोलती क्यों बन्द है ?

उ० : हमने किसी का बेड़ा गर्क नहीं किया। जनता पार्टी छलनी थी, जो किश्ती बनकर तैर रही थी। मौज में आई तो डूब गई।

राजेन्द्र सिंह 'राजा'—जमशेदपुर : दुनिया का सबसे अधिक खतरनाक जानवर कौन-सा है ?

उ० : जो दुनिया के सभी जानवरों में अपने को सर्वश्रेष्ठ कहता है।

प्रभजोत सिंह 'चुघ'—लुधियाना : माई डीयर अकल, हमें यह समझ नहीं आता कि प्यार मुहब्बत में दिल, जिगर आदि की बातें तो होती हैं, फेफड़ों का जिक्र क्यों नहीं होता ?

उ० : लीजिये, हम दो शेर पेश करते हैं।

प्यार में तीर खाये जाते हैं।
दिल जिगर आजमाये जाते हैं।
अपनी उल्टी अजीब हालत है।
फेफड़े फड़फड़ाये जाते हैं।

श्यामलाल शर्मा—नई दिल्ली : हमें तो आप अपने जवाबों से लाजवाब कर देते हैं। कभी चाची को भी आपने बातूनी होने का कमाल दिखाया है ?

उ० : कल ही की बात है। वह बोलीं, 'क्या मुसीबत है, मेरे पास साड़ी है, पर ब्लाऊज नहीं। सुर्खी है, पाऊडर नहीं। काजल है तो सुर्मा नहीं' इस पर हमने जवाब दिया, अपनी हालत तुम से भी खराब है डार्लिंग, यहां जेब है, पैसे नहीं।'

संजय कुमार शर्मा—अलीगढ़ : आदमी की धन की चाहत कैसे समाप्त की जा सकती है ?

उ० : आदमी को समाप्त करके।

जय भगवान, निराला—रिवाड़ी आप दीवाना में कब से प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं ?

उ० : जब से दीवाना का प्रकाशन आरम्भ हुआ, हम तभी से प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं'

हरजसदीप सिंह—पटियाला : मनुष्य का गुस्सा प्यार में कब बदलता है ?

उ० : जब हाथापाई की नौबत आने पर सामने वाला आस्तीनें चढ़ाये, कमीज उतारे और पता लगे कि जिसे हमने हड्डियों का पिंजर समझा था वह दारा सिंह या मुहम्मद अली जैसा पला हुआ पट्ठा है।

जीत सिंह भाटिया—डोंगर गढ़ : बुरे वक्त में सब साथ क्यों छोड़ जाते हैं ?

उ० : सब कहां साथ छोड़ते हैं। बुरा वक्त तो आखीर तक साथ निभाता है। आपने सुना होगा :

यूं हसरतों के दाग मुहब्बत में धो लिये,
कुछ दिल से दिल की बात कही और रो लिये।
घर से चले थे हम तो खुशी की तलाश में,
गम राह मे खड़े थे वही साथ हो लिये।

चन्द्रभान अनाड़ी—जबलपुर : एक अनाड़ी का अक्लमंद से पाला पड़ जाये तो क्या होता है ?

उ० : वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है एक आदमी ने एक तांगे वाले से पूछा, 'तांगा खाली है, क्या जाओगे ? 'तांगे वाले ने उत्तर दिया, हां जाऊंगा, वह आदमी बोला, तो फिर खड़े क्यों हो जाओ ?

★

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सवाल यह है?

क्या इन आविष्कारों का कोई जवाब है?

जिनके लिए भारत सरकार हमें पुरस्कार देने पर विचार कर रही है।

मुफ्त टेलिफोन करने वालों के लिए मुक्का मार रिसीवर

इसके अन्दर एक ग्राटोमैटिक मुक्का फिट है। मुफ्त टेली-फोन करके आपको बार-बार परेशान करने वाला जैसे ही रिसीवर उठायेगा एक भरपूर मुक्का उसे दिन में तारे दिखा देगा।
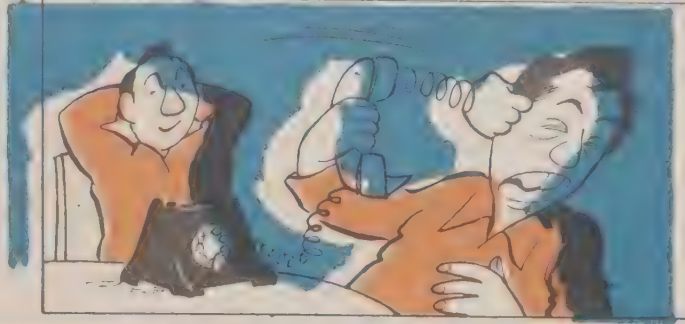
फैमिली साईज टूथपेस्ट

छोटी मोटी ग्रायुर्वेदिक जड़ी बूटियों की बजाये, बड़े-बड़े जंगली दरख्तों से बनी 'टीको टमरिको' टूथपेस्ट। बड़ी किफायती ट्यूब खरीद कर पैसे बचाइये ग्रौर परिवार को सुखी बनाइये।

दुनिया धड़ाम किट

हमारी दुनिया विनाश की ग्रोर जा रही है। इसे बारूद के गोले की तरह धड़ाम से उड़ाने में संसार के वैज्ञानिक बहुत देर कर रहे हैं। पर आप जब चाहें इस मुसीबत भरी दुनिया से छुटकारा पा सकते हैं।

कभी समाचार पत्र पढ़ते-पढ़ते ग्रापको लगे कि यह दुनिया धेले की नहीं है ग्रौर नित नई समस्याओं से यह दुनिया वास्तव में सर दर्द बन गयी है···
तो इस किट में लगा एक बटन दबा दीजिए। यह दुनिया धड़ाम से उड़ जायेगी। मूड ठीक हो जाये तो इस किट पर हमारी बनाई हुई फिर एक नई दुनिया फिट कर दीजिए। खरीदने वालों के लिए किट के साथ पंद्रह मुसीबत भरी दुनियायें। ग्रलग से नई मुसीबत भरी दुनियायें, अतिरिक्त मूल्य देने पर फ्री।
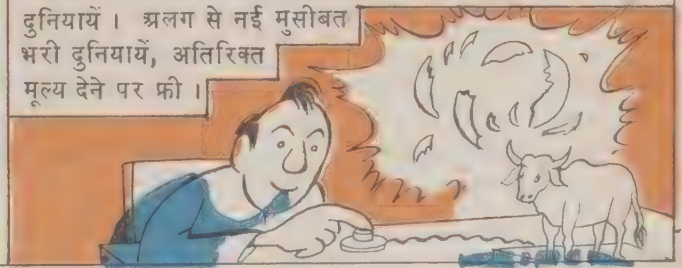
पेंसिल चबाने वाले आटोमैटिक दांत

दिमागी परेशानियों ग्रौर उलझनों में फंसे रहने वाले लोगों को ग्रब पेंसिल चबाने के लिए ग्रपने दांतों को कष्ट देने की कोई जरूरत नहीं।

किंग साईज सिग्रेट ग्रापकी सांस समाप्त हो जाएगी, सिग्रेट समाप्त नहीं होगी इस बात की गारंटी।

नकली जीभ

टिकट जमा करने वाले जो बच्चे बार-बार मना करने पर भी जीभ से ही टिकट चिपकाते हैं, उनके लिए रबड़ ग्रौर प्लास्टिक से बनी यह जीभ बहुत उपयोगी है।
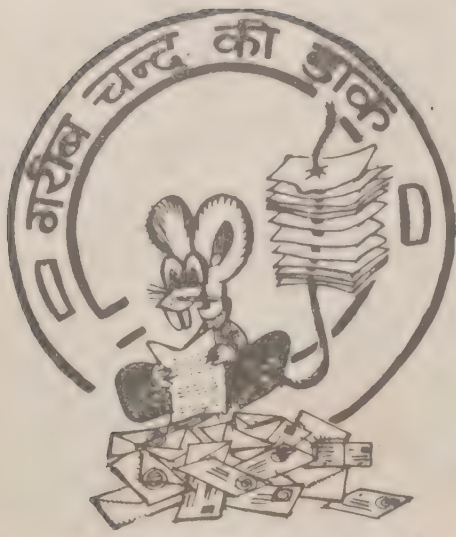
किशोर होतवानी—मदन होतवानी : गरीब, चन्द जी मुझे रात में नींद नहीं आती, आप ऐसा इलाज बतायें कि मुझे रात में नींद आ सके।

उ० : आप घोड़ों की खरीद फरोख्त का व्यापार करें। रोज शाम को दो तीन घोड़ बेच दिये और सो गये।

हेमन्त कुमार संुहालका—चित्तौड़गढ़ : मेरे मकान पर आजकल चूहे ज्यादा घूम रहे हैं, आप ही के भाई लगते हैं?

उ० : लगने से कुछ नहीं होता। आजकल आदमियों और चूहों में फर्क करना बहुत मुश्किल हो गया है। मैडिकल टैस्ट के बाद ही पता लगेगा कि वह मेरे भाई हैं या आपके।

राजाराम भेरूमल—परताड़ा : गरीबचन्द जी आप अभी तक दिवाना में कितने बिल बना चुके हैं?

उ० : अब मुझे खुद बिल बनाने की जरूरत नहीं रही। बिल बनाने के लिए मैंने अपने भतीजे को अपना एकाऊंटेंट वना रखा है। सब तरह के बिल वही बनाता है।

हिमांशु भूषण वर्मा—बिहार : माई डीयर चूहाराम, आप मेरे इस पहले पत्र को पढ़कर ही कुतुरिएगा। आप हमें ये बतायें कि 'हनुमान चालीसा' पाठ करने से 'भूत पिशाच' भागते हैं। और कौन-सा चालीसा पढ़ूं जिससे मेरे घर में बैठे आपके बिरादरी के लोग भागें?

उ० : कहते हैं डूबते जहाज से, पहले चूहे भागते हैं, आप अपना घर बेंच कर जहाज खरीद लीजिए।

अशोक कुमार गुप्ता—बिहार : शराबी शराब के नशे में सब कुछ भूल जाता है पर अपने घर का रास्ता नहीं भूलता है—क्यों?

उ० : क्योंकि उसकी अलमारी में कपड़ों के नीचे शराब का अद्धा जो है, वही राडार की तरह उसे घर का रास्ता बताती है।

एस० एम० आलमगीर—हजारी बाग : गरीब चन्द जी, क्या आप हमें अमीर चन्द से गरीब चन्द बना सकते हैं।

उ० : यह काम इन्कम टैक्स विभाग का है। मैं सरकारी मामलों में दखल नहीं देता।

प्रकाश दीप कमल—बिहार : गरीब चन्द जी, मैं आपका एक प्यारा सा फोटो चाहता हूं। क्या आप भेज सकते हैं।

उ० : पहले आप उस लड़की की फोटो भेजिये जिसे आप मेरे फोटो दिखाना चाहते हैं।

बाबू मियां गिलानी—पटना : गरीब चन्द जी अगर किस्मत को जंग लग जाय तो क्या करना चाहिए।

उ० : मेहनत का पेन्ट करने पर किस्मत को जंग नहीं लगता। जब जंग लग ही गया तो आप कबाड़ी से सलाह मशविरा करें।

भोला गुजराल—करनाल : गरीब चन्द जी आपका कद कितना है? आप नेकर पहनते हैं या पेन्ट? मैं आपको गिफ्ट देना चाहता हू।

उ० : मैं कुछ भी नहीं पहनता क्योंकि नेकर पहनो तो लोग आर० एस० एस० का चूहा समझते हैं और पेंट पहनो तो सी० आई० ए० एजेन्ट।

मोहन लाल शर्मा—करनाल : गरीब चन्द जी, नाम के मुताबिक क्या आप वाकई में गरीब हैं?

उ० : जी हां, मेरी बगल वाली कोठी में भी सेठ कौड़ीमल रहते हैं और उनसे आगे लाला दमड़ीमल! हमारी बस्ती ही गरीबों की है।

दिनेश राजेश बाज्राचार्य—नेपाल : गरीब चन्द जी, हर सप्ताह कितने दीवाना छपते हैं? कौन-कौन से देश में भेजते हैं? और वार्षिक ग्राहक कितने हैं? कृपया सच सच बताइये। झूठ बतानेपर पाप लग जाएगा।

उ० : दीवाना की प्रतियां गिनने की किसे फुर्सत है? हम सप्ताह के दिन गिनते रहते हैं और दीवाना के मालिक नोट।

योगेश संघवी जैन—बेरमो : काम के बदले भोजन में घोटाला होने लगा है ऐसा क्यों?

उ० : क्योंकि घोटाला खुद भोजन कार्यक्रम का अंग है। हमारे देश में लाखों लोग घोटालों की ही रोटियां खाते हैं।

सुन्दर कुमार साह—कलकत्ता : गरीब चन्द जी, आप के दो हो दांत क्यों हैं?

उ० : ताकि कोई मेरे उत्तरों से नाराज होकर मेरे दांत तोड़ना चाहे तो उसे अधिक परिश्रम न करना पड़े। आजकल मित्र काम चोर हैं।

मुकेश भटनागर—किला चित्तौड़गढ़ : गरीब चन्द जी, अगर आपकी शादी हेमा मालिनी से कर दी जाय तो कैसा रहेगा?

उ० : इसके बजाये आप कर लेते तो अच्छा रहता। आप चित्तौड़गढ़ के किले में रहते हैं वहां धर्मेन्द्र को आने से रोकना ज्यादा आसान रहता।

ब्रज भूषण—भिवानी : आजकल का इन्सान न जाने अपने आपको क्या समझता है?

उ० : यूं कहिये कि क्या नहीं समझता अपने आपको।

रवि भाटिया—शंकर रोड मार्किट : मेरी प्रेमिका आपसे मिलना चाहती है। बताइये कहां मिलें?

उ० : हस्पताल के नजदीक। वहां बेहोश भी हो जाये तो एमरजेन्सी वार्ड में ले जाने में आपको आसानी रहेगी।

सलिल शर्मा—इन्द्रपुरी, दिल्ली : गरीब चन्द जी क्या १९८० में दुनिया खत्म हो जाएगी?

उ० : खत्म भी हो गयी तो क्या? ब्लैक में तो मिल ही जायेगी।

चन्द्रभान अनाड़ी—जबलपुर : मरने का सबसे ज्यादा दिलकश अंदाज कौन सा होता है?

उ० : फोटोग्राफर की दुकान में फोटो खिंचवाते समय मरना।

प्रहलाद जसवानी—मण्डला : गरीब चन्द जी, गरीब के पास सबसे कीमती चीज क्या होती है?

उ० : आशा इस बात की है कि अमीरों को अपने पापों की सजा जरूर मिलेगी। इसी झूठी आशा के सहारे वह गरीबी के दिन काट लेता है।

जी० एस० चौहान—बिलासपुर : प्रिय गरीब चन्द जी यदि बिना कारण लैला जी रूठ जाएं। तो मजनूं मियां क्या करें?

उ० : बिना कारण प्रैजेन्ट पेश करें।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पृष्ठ १८ का शेष भाग

मुच उसमें कोई कीमती चीज हो इसीलिये चोर ले गये हों'

'बकवास' जादूगर कोका ने मुंह बिचकाया, 'अलीबाबा दि ग्रेट कोई अमीर थोड़े ही था। वह हमेशा फक्कड़ रहा। अलीबाबा भी जादूगर था उसके संदूक में जादू के कुछ खेलों का भेद होगा जो किसी आम आदमी के काम की चीज नहीं है। मेरे जैसे जादूगर के लिये ही उनका महत्व है। छोटे कद का गोल मटोल आदमी था। यह कभी-कभी चीनी लिबास भी पहनता था जिससे सचमुच जादूगर सा लगे।

कहते-कहते वह चुप हो गया और कुछ सोचने लगा! फिर हार मानने की मुद्रा में कंधे झटकाये जिसके साथ ही उसके हाथ के नोट गायब हो गये।!

चलो मेरा आना बेकार रहा। खैर बेटे! वह सन्दूक तुम्हें मिले तो मुझे देना! मेरा कार्ड रखलो। मिलते ही मुझे टैलीफोन करना! शाबाश! भूलना मत।' उसने कहा।

मुझे तो उम्मीद नहीं है ट्रंक वापिस मिलने की।' राजू बोला, तुम्हारे पिता पुलिस कमिश्नर हैं। उनके गैराज से चोरी हुई चीज पुलिस खोज निकालेगी।'

वह जाने के लिये मुड़ा फिर रुककर जेब में हाथ डाला और उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव आये! हाथ जेब से बाहर आया तो उसमें एक अंडा था।

'यह अंडा मेरी जेब में आया, जादूगर ने स्वयं से प्रश्न किया, 'मुझे तो नहीं चाहिये अंडा।'

यह कह उसने अंडा महिन्द्र की तरफ उछाला। उसने कैच लेने की मुद्रा में हाथ ऊपर उठाये! लेकिन अंडा हाथ में आने से पहले ही गायब हो गया।

'हूँ जादूगर मुस्कराया, लगता है वह मुर्गे का अंडा था। अंडा तो मुर्गी देती है इसीलिये अंडा भी गायब हो गया अच्छा तो मैं चला। मुझे टेलीफोन करना न भूलना।'

तीनों इस अप्रत्याशित मुलाकात से चकित रह गये।

इतने में अन्दर से राजू की मम्मी की आवाज आई। कोई टेलीफोन पर राजू से बात करना चाहता था।

रिसीवर कान से लगाकर हैल्लो के बाद दूसरी तरफ से आवाज आई, 'मैं सुरेश बोल रहा हूं। पहचाना मुझे? भारत समाचार का संवाददाता। तुमने अपनी फोटो हमारे अखबार में देखी होगी। मैं यह जानना चाहता हूं कि सन्दूक में से क्या निकला! उसी पर मैं एक और फीचर लिखूंगा।'

राजू ने उदास स्वर में उत्तर दिया, 'खोलने की बारी ही नहीं आई, वह सन्दूक तो चोरी हो गया।'

सुरेश की आवाज आई, 'धत्त तेरे की। मेरा फीचर चला गया। मैं तुम्हें एक बात बताना चाह रहा था।' मुझे अलीबाबा नाम जाना-पहचाना सा लगा, मैंने अपने दफ्तर से आकर अपने अखबार के पुराने रिकार्ड छान मारे और एक मजेदार सूचना निकाल ली, अलीबाबा दि ग्रेट जादूगर था। उसका सबसे मशहूर ट्रिक बोलती खोपड़ी का था। उसके पास एक खोपड़ी थी जो लोगों के सवालों के जवाब दिया करती थी खोपड़ी का नाम बेताल था।'

राजू को आश्चर्य हुआ, 'खोपड़ी कैसे बोल सकती है।'

'इसीलिए तो फोन किया मैंने। सोचा कि तुमने सन्दूक खोला होगा तो शायद वह खोपड़ी मिली होगी और खोपड़ी के बोलने का राज खुल जाता! खोपड़ी के अन्दर कहीं गुप्त ट्रांजिस्टर फिट कर रखा होगा। लेकिन तुम कह रहे हो कि सन्दूक ही चोरी चला गया तो क्या हो सकता है?'

बोलने वाली खोपड़ी की बात पर महेन्द्र और श्याम ने एक-दूसरे की ओर देखा।

राजू कह रहा था, 'कुछ न कुछ भेद तो रहा ही होगा! मुझे बड़ा अफसोस है।'

सुरेश बोला, 'और सुनो, एक वर्ष पहले अलीबाबा अचानक गायब हो गया। कोई नहीं जानता वह मरा या जीता है। खैर चलो छोड़ो अब यह बातें।'

टेलीफोन रखने पर आस-पास मंडराती अपनी मम्मी की तरफ राजू ने ध्यान से देखा। वह शायद उनकी बातचीत सुन रही थी और धीरे-धीरे मुस्करा रही थी। तीनों लड़कों को अपनी तरफ ताकते पाकर वह बोली, 'तुम तीनों का मुंह इसलिए लटका हुआ है कि संदूक जो तुम जाने कहां से सुबह उठा लाये थे नहीं मिल रहा है? गैराज भी भला सन्दूक रखने की जगह है। मैंने तुम्हारे जाने के बाद उसे उठवा कर तुम्हारे कमरे में रखवा दिया था। और अब तक मैंने इसलिए नहीं बताया ताकि चीजों को गलत जगह रखने की सीख मिले तुम्हें। गाड़ी निकालनी होती है...।'

उनका वाक्य पूरा होने से पहले ही तीनों झपटते हुये अपने हैड क्वार्टर की ओर रवाना हो चुके थे।

श्याम के घर से लाई चाबियों में से पहली चार नहीं लगी। पांचवी चाबी क्लिक की आवाज के साथ घूम गयी और ताला खुल गया। राजू ने सन्दूक का ढक्कन उठाया!

तीनों ने सन्दूक में झांका! सन्दूक दराज वाला था सबसे ऊपर लाल रेशमी कपड़ा बिछा था जिस पर अलग-अलग रंगों के कपड़े में छोटे-छोटे बंडल थे। एक शीशे का गोल स्टैंड सहित, आठ-दस छोटे-छोटे लाल गोले, ताशों की कई जोड़ियाँ, धातु के कुछ रूप रखे थे! खोपड़ी नहीं थी।

राजू ने ऊपर वाला दराजमय सामान के उठा कर बाहर रखा। नीचे कुछ कपड़े से रखे थे। राजू ने एक-एक कर उन्हें बाहर निकाला। कई रेशमी जैकट, एक सुनहरा लम्बा चोगा, एक पगड़ी और चीनी लिबास।

महेन्द्र को वह चीज सबसे पहले नजर आई जिसकी उन्हें तलाश थी उत्तेजित स्वर में वह चिल्लाया, 'वह रहा उस कोने में। पीले कपड़े के नीचे।'

राजू ने हाथ उठाया। महेन्द्र ने गोल सी चीज पर से पीला कपड़ा उठाया। अब राजू के हाथ में एक सफेद चमकती हुई मानव खोपड़ी थी। खोपड़ी भयानक नहीं लगती थी बल्कि ऐसा लगता था जैसे निरीह हो।

'यही है वह खोपड़ी' राजू बोला, 'सन्दूक में नीचे और कुछ है।'

उसने खोपड़ी महेन्द्र के हाथ में दी। और सन्दूक में हाथ डाल लकड़ी का दो इंच मोटा चौकोर टुकड़ा निकाला। लकड़ी पर नक्काशी की गयी थी और जगह-जगह छेद से बने थे।

'यह इस खोपड़ी का तख्त होगा।'

क्रमशः

खेलों का भारतीयकरण

ग्राजकल खेले जाने वाले ग्रधिकतर खेल पश्चिमीनकल पर खेले जाते है या ग्रमीरों के खेल होते हैं। इन सब खेलों को भारतीय रूप में ढालना चाहिए। भारत एक गरीब देश है। यह नहीं होना चाहिए कि कुछ तो खेल मे मस्ती मारें बाकी रोटी-पानी की चिन्ता में डुबकियां खाते रहें। बेकारी ग्रौर गरीबी की समस्यायें हमारे सामने मुंह बाये खड़ी हैं। हमें हर ऐंगल से इन समस्याग्रों से लड़ना चाहिए। भूखे गरीब देश में खेल एक मजाक है। हमारा सुझाव यह है कि भारतीय परिस्थितियों के ग्रनुसार खेलों मे ऐसा परिवर्तन किया जाए कि उसमें बेकारी की समस्या से निबटने के रास्ते मिलें। कुछ उदाहरण–

भूसा गद्दा

पोलवाल्ट, ऊंची कूद, लम्बी कूद ग्रादि के खेल फसल के मौसम में, गांवों मे किसानों के खेतों में जहां भूसा पड़ा हो, ग्रायोजित किये जायें। एक तो गद्दो की जरूत नहीं पड़ेगी, दूसरे किसान को भूस का किराया मिल जायेगा। इसके ग्रतिरिक्त शॉट, पुट ग्रौर भाला फेंक ग्रादिखेल जुताई से पहले खेतों में ग्रायोजित हों। मिट्टी नरम हो जायेगी, ग्रौर हल चलाने में सुविधा रहेगी।
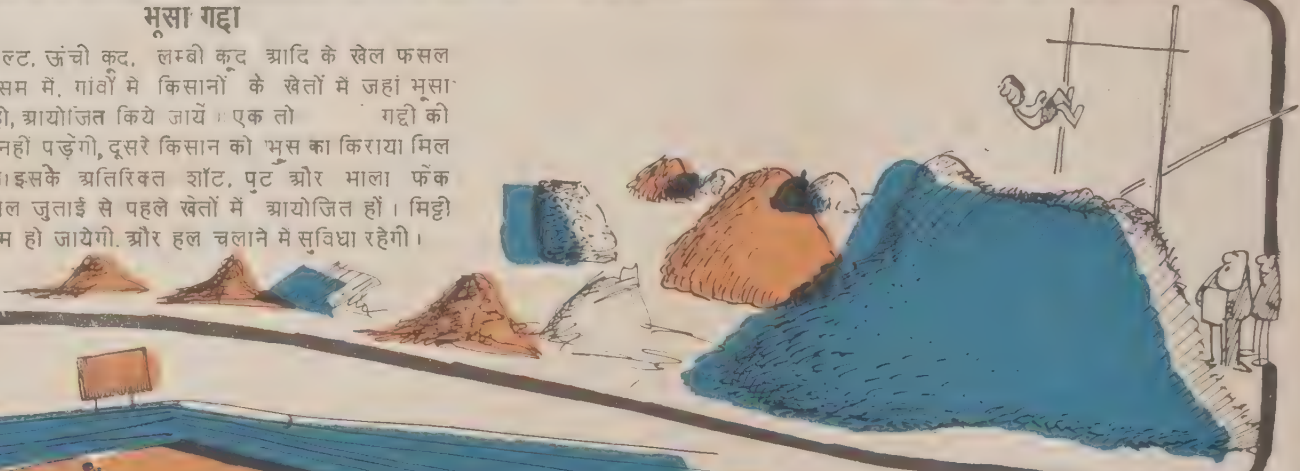
नाइट वाच एक्स सर्विस मैन

क्रिकेट के खेल में खेल के ग्रंतिम मिनटों से बेट्स मैन ग्राऊट होता है तो उसकी जगह सलामी बल्ले बाज की जगह किसी ग्रौर को नाइट वाच मैन के तौर पर भेजा जाता है। यह प्रथा बन्द कर दी जाए, उसकी जगह नाइट वाच मैन किसी भूत पूर्व सैनिक को भेजा जाए। वह बन्दूक लेकर रात भर सचमुच पिच का पहरा दे। उसे रेगुलर खिलाड़ियों के पारिश्रमिक का ९/१३ वां भाग दिया जाये।

कुली रनर

क्रिकेट के खेल मे पैसा है। नियमों में संशोधन कर इसमें ग्रतिरिक्त लोगो को रोजगार के ग्रवसर दिये जा सकते हैं। मसलन बेट्स मैनों को रन बनाने के लिए दियाड़ी मजदूर लगाने की ग्राज्ञा मिले। बेट्स मैन केवल बॉल हिट करेगा। रन बनाने के लिए दौड मजदूर लगायेंगे। उसी प्रकार फील्डिग साइड के खिलाडी गेंद के पीछे भागने के लिए कुली रख सकते हैं।
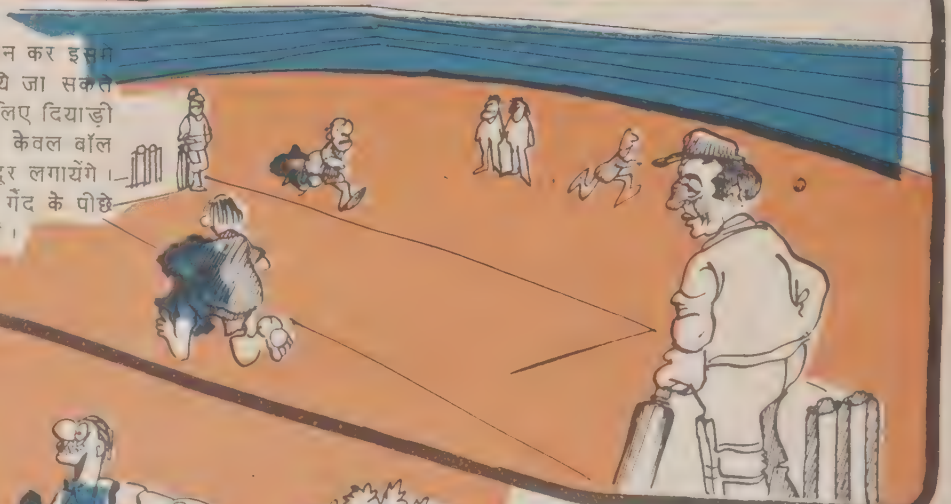
पता देने वाले को इनाम

गल्फ कोर्सों की घास न कटवाई जाये, इससे गल्फ बाल ग्रौर ज्यादा गुम होंगे। गल्फ के खेल में बालों का गुम होना एक बड़ा सरदर्द है गल्फ कोर्सों में पेशेवर गेंद तलाशू रखे जायें। जो खोई गेंद को ढूंढ कर पता बतायेगा उस गोलफर को वैसे ही इनाम देना पड़ेगा जैसे गुमशुदा लडके का पता बताने वाले को इनाम मिलता है। इनाम से ही कईयों की रोटी चल जायेगी।

मोतीचूर बिलियर्डस
बिलियर्डस में गेंदों की जगह मोतीचूर के लड्डुओं का प्रयोग हो। कोनों के छेदों के ठीक नीचे मुँह खोलकर पांच साल से बेकार बैठे ग्रेजुएटों को लिटाया जाये। इस प्रकार कम से कम उनका पेट तो भर जाएगा।
बॉली बाल खाट नैट
बाली बाल में धागों के नैटों का प्रयोग निषेध कर दिया जाये। नैट की जगह पोलों पर बान से चारपाई बुनने वालों से खाट की तर्ज का नैट बंनवाया जाए। खटिया बुनने वालों की खटिया खड़ी नहीं रहेगी। उन्हें काम मिल जाएगा।
बूट पालिश फुटबाल
फुटबाल के खेल में बूट पालिश वालों को खेल के दौरान मैदान में जाने की आज्ञा दी जाय। बूट पालिश के धन्धे में कई घरों के चूल्हे जलेंगे। गोल कीपर बूट पालिश करवा रहा हो और बीच में गोल ही जाये तो वह गोल न माना जाये। बिना पालिश के मलीन जूते फाउल माना जाये। गर्ज यह कि फुटबाल गेम में सबसे ज्यादा जोर पालिश पर दिया जाये।
रिक्शा पोलो
वाटर पोलो, हार्स पोलो और साईकल पोलो खेली जा रही हैं। इसी आधार पर साईकल रिक्शा पोलो खेल चालू किया जाये। इससे हजारों लोगों को रिक्शा पोलो के चालकों के रूप में काम मिल जायेगा।
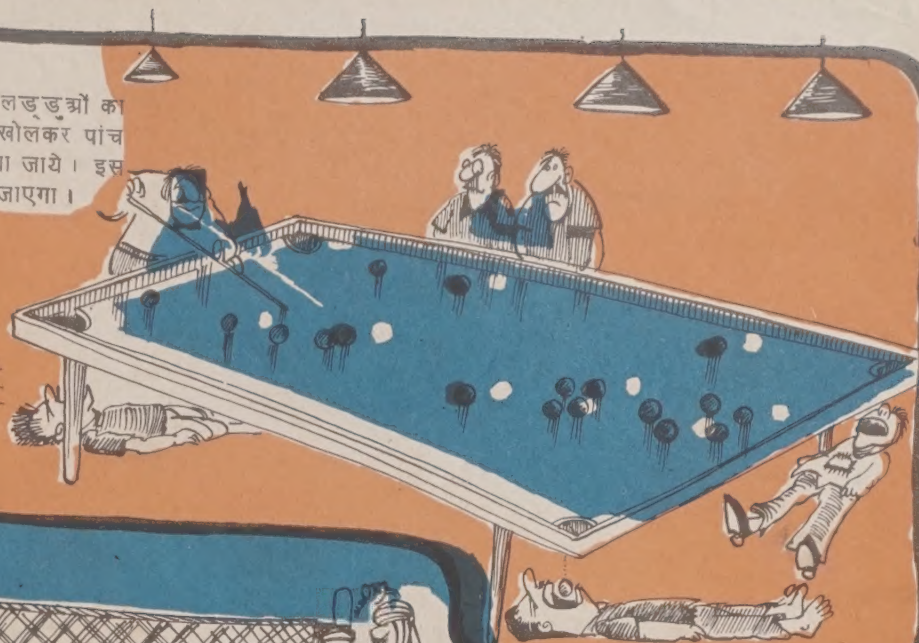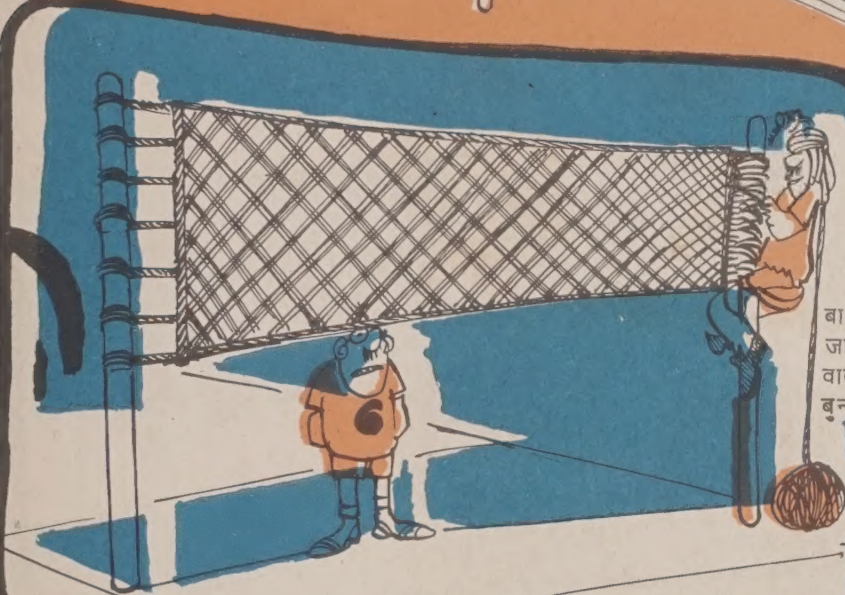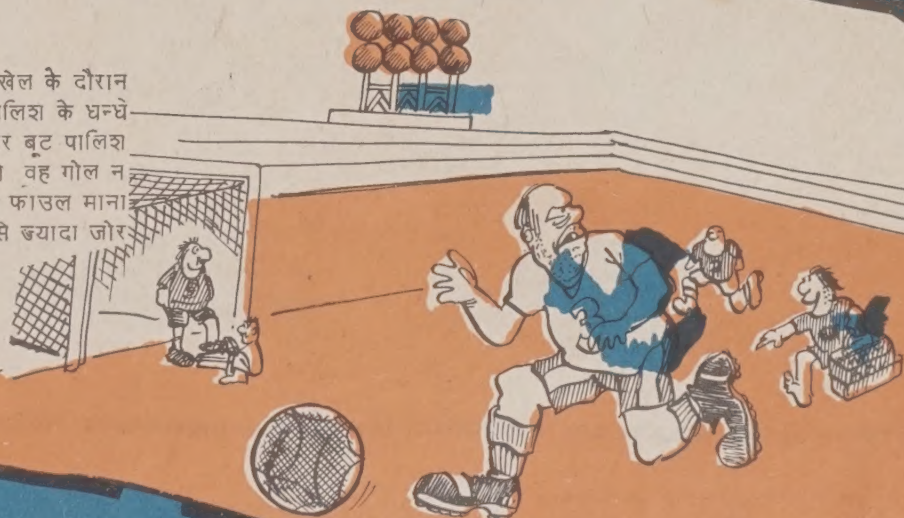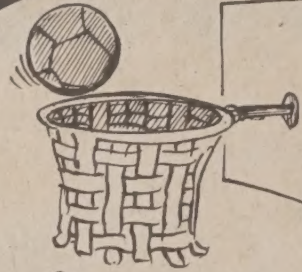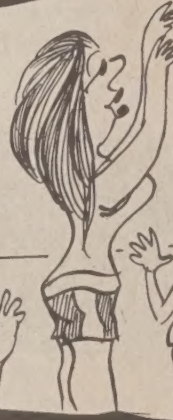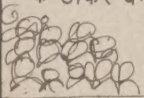
ही ही ही

● जहाज में एक साहब खिड़की के साथ बैठे थे। वे बाहर का नजारा देख रहे थे बादलों का। अचानक एक व्यक्ति पैराशूट से लटकता खिड़की के पास से नीचे उतरने लगा।

पैराशूट वाले व्यक्ति ने चिल्लाकर पूछा, "मेरे साथ आ रहे हो नीचे ?"

साहब मुस्कराये, "धन्यवाद ! मैं यहीं मजे में हूं। आप शौक से जाइये नीचे।"

पैराशूट वाला बोला, "जैसी आपकी मर्जी। लेकिन आपको यह बता दूँ कि मैं इस जहाज का पायलट हूं।"

● एक, 'अलीबाबा अचानक जिन्दा हो जाये तो आज की दुनिया देख चकित रह जायेगा।'

दूसरा, 'विशेषकर जब उसे पता लगेगा कि चालीस चोरों ने इन्कम टैक्स और सेल्ज टैक्स नाम के विभाग खोल रखे हैं।'

● एक व्यक्ति चंडू खाने के पास से गुजर रहा था कि एक अफीमची बाहर निकला और उस व्यक्ति से पूछने लगा, 'भाई साहब टायम क्या है ? तीन बजे हैं' उसने बताया।

दोनों अलग दिशाओं में कुछ कदम चले ही थे कि अफीमची ने मुड़कर पूछा, 'यह आज है या कल ?'

● चंडू खाने में तीन अफीमची बैठे अफीम पी रहे थे। उनमें से एक बोला, 'चलो आज एक खेल खेलते हैं। कुछ देर बाद हम तीनों में से एक उठकर घर चला जाये ! बाकी दो को यह पता लगाना होगा कि तीनों में से कौन सा घर गया है।'

...जोशी, ३०, नेताजी मार्ग, दरियागंज, नई ... २३ वर्ष, शेर ओ ... विद्रोही विचारों का ... करना।

संजय वस्टुआ, बी-५ ३०, महेश नगर, गोरेगांव बम्बई, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, नई फिल्में देखना, गाने सुनना, नावल पढ़ना, सैर करना।

संदीप कुमार माझा, ६-बी दक्षिण गरदनी बाग, पटना ८०००८, २० वर्ष, टिकट, मित्रता, समाज सेवा, नयी जगह घूमना।

राजेश कुमार बाजोरिया, दर्जी पट्टी, झरिया, (धनबाद) १३ वर्ष, पत्र-मित्रता, सभी पत्रिकायें पढ़ना, दूसरों को दम भर पीटना।

कुलजीत अरोड़ा, १५७६ ६, गली आना वाली, थांक छटरी जुई, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, टिकट इकट्ठे करना, शतरंज खेलना, सैर करना।

मुकेश महन्त, फतेह सागर की नहर पर, मियों की मस्जिद के पीछे, जोधपुर, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना व क्रिकेट खेलना गाने गाना।

विजय अरोड़ा, दूरभाष केन्द्र, २१ वर्ष, कोट कपूरा-१५१२०४, २१ वर्ष, पत्र-कारिता, दोस्ती करना, पढ़ना, बड़ों का आदर करना।

...सिंह, कोयरी बाध ... १६ वर्ष, फिल्म और दीवाना पढ़ना, ... प्यार करना, सैर ... गाने गाना।

श्रीराम 'कोमल', ६२, रामदेव रोड, पाली—राजस्थान, १८ वर्ष, कविता, पत्र-मित्रता करना, बैडमिन्टन खेलना, घूमना, सैर करना।

अरविंद वसंत कोलबे, लास-क गांव, सेंट्रल रेलवे स्टेशन, रेल क्वार्टर, क्रमांक डी. एच. आई. ए. जिला० नाशिक त० नफाड महाराष्ट्र, २० वर्ष।

विश्वानाथ पाल, सैक्टर ८/११४०, आर० के० पुरम, नई दिल्ली, २० वर्ष, पत्र-मित्रता, संगीत, कहानी लिखना, सैर करना।

राज कुमार राठी, फगल पांडा, २४ वर्ष, टिकट संग्रह करना, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, बड़ों का आदर करना, सैर करना।

पुरुषोत्तम खत्री, छबीली घाटी के नीचे, बीकानेर, १२ वर्ष, पतंग उड़ाना, दीवाना पढ़ना, बच्चों को प्यार करना, सैर करना, फिल्म देखना।

महेन्द्र पाल सिंह मुलतानी, लक्ष्मी पुरा, बाड़मेर (राज०) १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, तैराकी, सीरियस फिल्में देखना, बड़ों का आदर करना।

... उपाध्याय, इंजी-... , कयाम्पस पुलचोक, ... (नेपाल), १७ वर्ष, ... मित्रता करना, सफर ... दीवाना पढ़ना।

रजनीश खन्ना, ८४४ विश्राम घाट मथुरा, २२ वर्ष, सफर करना, चुटकुले सुनाना, रेडियो सुनना, फिल्म देखना, पत्र-मित्रता करना।

शेखर कुमार मारपीजा, क्लब रोड, मितनपुरा, मुजफ्फरपुर, (बिहार), १३ वर्ष, हीरो बनना, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता सैर करना।

अरुण कुमार, ग्राम—भगवान-पुर, पो० थाना, ... जि० नालन्दा, बिहार, १४ वर्ष, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, गाना सुनना, सैर करना।

राजीव कपूर, ८ ए १४०, हस्तु० ई० ए० करोल बाग, खन्ना मार्किट, नई दिल्ली, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, किताबों में रुचि रखना।

अनूप कुमार पुरी, ६ ए, जाप-लिंग रोड, लखनऊ, २० वर्ष, सबको हसाना, किताबें पढ़ना, बड़ों का आदर करना, दुनिया की सैर करना।

यूसुफ अली, मस्जी मस्जी, मुजानगढ़, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, रेडियो सुनना, फिल्म देखना, बड़ों का आदर करना, ... करना।

... कुमार सविता, राजो... कैराना (उ० प्र०) ... वर्ष, पत्र-मित्रता करना, ... पढ़ना, फिल्मी गीत ... फोटोग्राफी करना।

पम्मी सलूजा, गीता स्टूडियो, चांदनी चौक, दिल्ली-६, १८ वर्ष, लड़कियों की अच्छी पोज फोटोग्राफ करना और झगड़ा करना।

रवि कुमार शर्मा, डब्लू. जेड. १५७२, नांगलराय, नई दिल्ली ६१, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, तैरना, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना।

दिलावर चन्द शर्मा, म० न० २६, तिहाड़ गांव, नई दिल्ली, १६ वर्ष, शेरो शायरी व लेखन, पत्र-मित्रता करना, बड़ों का आदर करना।

रविन्द्र कुमार चुघ, ७६६ ११, नजदीक बाबर का मकबरा, पानीपत, १६ वर्ष, संगीत सुनना, फटी पुस्तक जोड़ना, मोटर साइकिल चलाना।

कन्हैया लाल बाधवानी, म० नं० ६/८७, अमला टोला, कटिहार, २० वर्ष, बहनों से पत्र-मित्रता, शायरी लिखना, क्रिकेट खेलना।

दविन्द्रपाल सिंह, १८ गोपाल नगर, (फतेह नगर), नई-दिल्ली-१८, २० वर्ष, दीवाना पढ़ना व सेहत बनाना, फिल्म देखना, सैर करमा।

...कुमार कपूर, २७ बी, ... गांव, नई दिल्ली-१८, ..., पत्र-मित्रता करना, ...लों को जोड़ना, मोटर ...ल चलाना।

महेश बहादुर वैद्य, बीरगंज, मुरली, १५/६५, व० अ० पर्सा जिला नेपाल, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, लड़कों से पत्र-मित्रता करना।

बाल किशन, ३२ रेलवे स्टेडियम कालोनी, नी, गोरख-पुर, १८ वर्ष, गाना सुनना, पत्र-मित्रता करना, सैर करना, फिल्म देखना।

जे० के० रोमियो, भारत-माल्वेन्टस, शाहाबाद, (एम) १३२१३५, २१ वर्ष, सच्चा व विश्वासी मित्र बनाना, परोपकार करना।

कन्हैया लाल केशवानी, अमला टोला, कटिहार, ८५४१०५, १८ वर्ष, बड़ों को बोर करना, घूमना, मोटर साइकिल चलाना, गाने गाना।

वीरेन्द्र कुमार सिंह, ११-आइ. एल. ४-आई. सी. रोड, कदमा पो० कदमा, जमशेदपुर-३, २१ वर्ष, क्रिकेट खेलना, कैरम, पत्र-मित्रता करना।

धनपत कुमार, श्री सम्पत मल जैन, मीलरोड, खगड़िया, जि० मुंगेर, (बिहार) १८ वर्ष, कार चलाना, पेंटिंग करना, सैर करना।

... कुमार सिंघल, सैक्टर ... हाउस नं० ४६, ...बाद, ओल्ड, हरियाणा, ..., दीवाना पढ़ना, बैड-... खेलना।

अभिमन्यु मिश्रा, मिश्रा पान बीड़ी शाप, सामून हाल, कुलाबा बम्बई नं० ५, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना और खुशी रहना।

धर्मव्रत, १४-१०-५४८, हाल पेट, १-हैज राजगढ़-६, १७ वर्ष, जूडो कैराटे, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, बड़ों का आदर करना।

राजेन्द्र पुरोहित, द्वारा अशोक एण्ड को०, के० ई० एम० रोड, बीकानेर (राजस्थान) १८ वर्ष, फिल्म देखना, बच्चों से प्यार करना।

किशोर कुमार जोशी 'करण', जोशियों का उपरला, बास-बाड़मेर (राज०) १६ वर्ष, कहानी लिखना, कविता लिखना, गाने गाना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____

पता ____

आयु ____ शौक ____

..., नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक-विश्वबन्धु गुप्ता।

32 वर्ष

Regd. No. D (D) - 275

थे
शूट से
उतरने लगे
पैराशूट
पूछा, "मेरे साथ
साहब मुस्करा